हिन्दू महासभा को समर्पित पत्र

सर्वोपर देश हित

मासिक संरक्षक ॐ परमपिता परमात्मा, सहयोगी आपका स्नेह

सावरकर टाइम्स

संपादक : जंगबहादुर क्षत्रिय 9599552030 * मूल्य दो रुपए
पंजाब -07837460375 savarkartimes7@gmail.com

क्रांतिकारियों के गुरु वीर सावरकर जी

वर्ष-12 (मासिक) डाक तिथि : 11-12 मार्च -2018 DELHIN/13377/2004 DL (E)-21/5052- नव संवत् का बारहवां महीना, चैत्र कृष्ण पक्ष २०७४

देश का विभाजन दो विचार धाराओं पर हुआ हिन्दू एवं मुस्लिम। पापिस्तान और हिन्दुस्थान। बंटवारे के कारण 35 लाख निर्दोष हिन्दुओं का भयंकर कत्लेआम, लाखों बलात्कार और सब कुछ लुट गया। कांग्रेसियों ने हिन्दू राज के स्थान पर भारत में धर्मनिरपेक्ष (धर्मविरूद्ध या धर्म विहीन या मानवता हीन) राज्य बनाकर हिन्दुओं के साथ विश्वासघात किया और इन्हीं इस्लाम व ईसाई आतंकवाद समर्थक धर्मनिरपेक्ष नेताओं ने भारत को पुनः पतन की ओर धकेल दिया। इस्लाम व ईसाईयत विदेशी हमलावर सभ्यताएं है, भारत की नहीं। 542 वर्ष पूर्व भारत में कोई भी मस्जिद नहीं थी, 250 वर्ष पूर्व भारत में कोई चर्च नहीं था। देश के धर्मनिरपेक्ष नेता राष्ट्रभक्त नहीं स्वार्थी सत्तालोलुप और देशद्रोही हैं। मूल निवासी हिन्दुओं का अस्तित्व एवं सम्मान सत्ता में हिन्दू महासभा को लाए बिना संभव नहीं। यदि अंग्रेज विदेशी हैं तो मुसलमान स्वदेशी कैसे- स्व. चमन लाल क्षत्रिय

२५ मार्च को विशाल श्रीराम शोभा यात्रा में जगद्गुरु शंकराचार्य पधारेंगे

सं. सरदार महेंद्र सिंह

श्रीराम शोभा यात्रा समिति लोनी की ओर से 25 मार्च को दोपहर3 बजे मदनलाल हलवाई के शिव मंदिर से प्रारंभ होगी श्रीराम शोभा यात्रा समिति लोनी के अध्यक्ष श्री जंगबहादुर क्षत्रिय ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि जोशीमठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अमिता नंद जी महाराज व संत महात्मा इस विशाल शोभा यात्रा में पधारें। शांति नगर, दो नंबर, बलराम नगर, लोनी चौक, गोरी मार्केट, त्यागी मार्केट, खन्ना नगर, नगर पालिका लोनी से श्रीराम गढ़ी के प्राचीन शिव मंदिर के प्रांगण में समारोह सम्पन्न होगा। श्री क्षत्रिय जी ने बताया कि 18 मार्च से नववर्ष सम्वत 2075 शुरू होगा देश के सभी हिन्दू व्यापारियों और उद्योगपतियों से अपिल है कि अपने खाते 18 मार्च से शुरू करें।

नेपाल में भारतीय पशुओं की कटान फैक्ट्री

प्राप्त जानकारी के अनुसार भारतीय सीमा से सटे नेपल के जिला वर्दिया के गुलारिया में चीन ने चाइना लाग फूड प्राइवेट कंपनी की स्थापना करके हजारों पशुओं का वध किया जा रहा है यहां पर भारत के राजस्थान, उ.प्र., मोतीपुरा, मुर्तिहा, नवाब गैंज, सुडौली से पुलिस की धड़पकड़ के बाद भी चोरी छिपे गोवंश पहुंचाएं जा रहे हैं इस फैक्ट्री से मांस की सप्लाई नेपाल से रूपईडिया कस्टम से गुजर कर भारतीय मार्ग से होती हुई मलेशिया, इंडोनेशिया, बैंकाक, चीन, खाड़ी के देशों में भेजा जा रहा है लेकिन कस्टम विभाग एस.एस.वी. खुफिया विभाग असहाय सिद्ध हो रहे हैं जिसके कारण पशु तस्करी व गोवंश वध नहीं रूप रहा है इस पर केंद्र सरकार ठोस कदम उठा

माननीय रामनाथ कोविंद जी, राष्ट्रपति भारत
माननीय नरेंद्र मोदी जी, प्रधानमंत्री भारत
माननीय दीपक मिश्रा जी, मुख्य न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट
सादर नमस्ते,

विषय-भारत गृह युद्ध की ओर बढ़ रहा है इस पर हिन्दू महासभा ने चिंता व्यक्त करते हुए पत्र द्वारा जानकारी भेज रहे हैं। 1914 लोकसभा चुनाव के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को किसी भी राजनीति दल ने देश के विकास में कोई ठोस सुझाव नहीं दिया है। देश में नोट बंदी व कालेधन पर अंकुश लगाने के लिए बैंकों से नोट वितरण पर देश के सभी अधिकारी तथा नेता गण लिप्त पाये गये हैं। गत 71 वर्षों से देश में भ्रष्टाचार, रेप की घटना, चरित्रहीनता देश में विराट रूप लिए हुए है जिसके कारण देश पतन की ओर जा रहा है। देश के अनेक समाचार पत्रों के माध्यम से पता चला है कि सेना और पुलिस में आतंकवादी घुसकर अपने देश की सूचना दुश्मन देशों तक पहुंचा रहे हैं देश में लोकतंत्र के नाम पर सभी राजनीतिक दल देश का विघटन करने के लिए षड्यंत्र रच रहे हैं और भारत के संविधान में डॉ. अम्बेडकर जी ने कहीं ऐसा नहीं लिखा है कि देश में विघटन तथा विद्रोह करने वालों को सम्मानित किया जाये। ये कानून के खिलाफ है राष्ट्रपति ध्यान दें कि विद्रोहियों के पर अंकुश लगाने के लिए सेना तथा पुलिस को पूर्ण अधिकार दिया जाए।

उप कार्यालय प्रताप गली पहाड़ गंज, नई दिल्ली-55
मो. 9818995523

भवदीय
अध्यक्ष जितेंद्र सिंह, अ.भा. हिन्दू महासभा

माननीय राज्यपाल महोदय जी उ.प्र.
माननीय मुख्य न्यायधीश उत्तर प्रदेश
माननीय योगी आदित्यनाथ जी, मुख्यमंत्री उ.प्र.
सादर नमस्ते,

विषय-उत्तर प्रदेश के सभी धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर हटाने की उपेक्षा हो रही है। महोदय जी से उ.प्र. में सरकारी घोषणाओं पर सभी धार्मिक स्थल उपेक्षा कर रहे हैं कि जिससे उ.प्र. में अनेक स्थानों पर विवाद का विषय बना हुआ है हिन्दू महासभा आप से प्रार्थना करती है कि सभी धार्मिक स्थलों से होने वाली ध्वनि प्रदूषण के कारण लाउडस्पीकर अपने ही हाल में रखे जाएं ताकि विद्रोह का विषय न बने उपेक्षा करने वालों पर शक्ति से कार्यवाई की जाए ताकि उ.प्र. में अमन और शांति बनाये रखने में श्रीमान जी आपकी ही जिम्मेदारी है।

भवदीय
महंत राजकुमार कौशिक जी महाराज, मंत्री अखिल भारत हिन्दू महासभा

माननीय योगी आदित्यनाथ जी, मुख्यमंत्री उ.प्र.
सादर नमस्ते,

विषय-जिला फैजाबाद का नाम के स्थान पर अयोध्या को जिला घोषित किया जाए।

अयोध्या भगवान राम का जन्म स्थान होने के कारण विश्व विख्यात नाम जुड़ा हुआ है, और विश्व स्तर पर लोग अयोध्या को श्रद्धा भाव से देखते हैं। अयोध्या के क्षेत्र को जिला बनाकर औद्योगिक क्षेत्र व व्यापारिक केंद्र भी बनाया जाए। जिससे विश्व भर से आने वाले लोग उनके दर्शन करने व श्रद्धा के पुष्प अर्पित करेंगे। वहीं व्यापारिक केंद्र होने की वजह से क्षेत्र का विकास हो सकेगा।

भवदीय
मुरारी लाल लोहरा, सह संपादक सावरकर टाइम्स व पूर्व उपचेयर मैन, लोनी
मो. 9350895166

सावरकर टाइम्स हिन्दू राज्य की लोकतंत्र प्रणाली की नई पीढ़ी को सही जानकारी प्राप्त करने के लिए आपके आर्थिक सहयोग की अति आवश्यकता है।
स्टेट बैंक हैदराबाद ब्रांच, ए-22 विवेक विहार दिल्ली-95
हमारा खाता नं. 62384620050 कोर्ड नंबर- IFSC-SBIN0021398
आप अपने मोबाइल से भी इस खाते में सहयोग राशि भेज सकते हैं। —संपादक

हिन्दू होना ही राष्ट्रीय होना है। विश्व में शांति के लिए हिन्दू विचारधारा से ही हो सकती है शांति।
—संपादक

महेश चन्द्र अग्रवाल
जिला संयोजक, नई दिल्ली सांस्कृतिक प्रकोष्ठ
नव वर्ष संवत् 2075 पर हार्दिक शुभकामनाएं 18 मार्च से नव वर्ष संवत् शुरू हो रहा है। सभी व्यापारियों से अपिल है कि वे अपने वही खाते 18 मार्च से प्रारंभ करें। 25 मार्च को राम शोभा यात्रा पर सबको हार्दिक वधाई।
भारतीय जनता पार्टी जिला नई दिल्ली
पताः 14, पण्डित पंत मार्ग, नई दिल्ली-110001
2232, राजगुरु रोड, चूना मण्डी पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055
फोन नं. - 011-23712744, मो. 930887559, 9213165711
Email-maheshaggarwal034@gmail.com

AMAR
BATTERIES & ELECTRICALS
Auth. Distributor : PRESTOLITE
ACTION BATTERIES Kayeee BATTERIES
Auth. Dealer:
EXIDE AMARON TATA
MICROTEK Su-Kam
B-11, Super, Bazar, D.D.A.
Mkt. Vivek Vihar-Delhi-95
Ph. 22150396, 22159757

Mob. 9999994910
9899822518
SHRI RAMRAJ ASSOCIATES
SAIE. PURCHASE & COLLABORATION
7/388, Swami Amar Dev Marg.
Jwala Nagar, Shahdara, Delhi-32

GOBIND MEDICAL STORES
GMS
COUNTER DELIVERY
1715/2, MANGAL BUILDING, BHAGIRATH PALACE, DELHI-110006
Phones : 2386767, 9811457330, 9911022245,
Email : sgms_rakesh@yahoo.co.in
S.T. No. : LC/14/000409/05/71 D.L. No. 26(375)20B&21B TIN: 07820000409

कोई धोखा नहीं, कोई लूट नहीं
कोलोबोरेशन पर या ठेके पर मेटीरियल सहित मकान/कोठी बनवाने के लिए मिलें
1. पूरी ईमानदारी मिलेगी।
2. मनमर्जी का तय किया हुआ मेटीरियल मिलेगा।
3. मनमर्जी का पीओपी, वुडवर्क और बाथरूम मिलेगा।
4. लैंटर और पिलर, बीम भरपूर सरिये व सिमेंट के होंगे।
5. निर्माण का पीरियड, रेट एवं शर्तें भी अन्य ठेकेदारों के मुकाबले लाभदायी आपके लिए होंगी।
6. हमारी ईमानदारी की चेकिंग हेतु आप अपना सुपरवाइजर बिठा सकते हैं। उसकी तनख्वा हम देंगे।
आलोक जिंदल-9811112571

स्वतंत्रता के बाद भी भारत में भारतीय कैलेंडर क्यों नहीं

दीपक चोपड़ा

दुख का विषय है कि स्वतंत्र भारत में आज भी भारतीय कैलेंडर नहीं चल रहा। पहली जनवरी को हेप्पी न्यू ईयर कह कर इस भारतीय विदेशी कैलेंडर को मान्यता दे रहे हैं। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने राष्ट्रीय पंचांग निश्चित करने के लिए प्रसिद्ध वैज्ञानिक मेघनाथ साहा के नेतृत्व में कैलेंडर रिफार्म कमेटी का गठन किया था।

1952 में कलकत्ता की वैज्ञानिक पत्रिका साइंस एंड कल्चर में यह रिपोर्ट प्रकाशित हुई। इस के बाद 1955 में भारत ने रिपोर्ट ऑफ कैलेंडर रिफार्म कमेटी प्रकाशित की। इस रिपोर्ट में ईस्वी सन् वैज्ञानिक विश्लेषण के प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं।

1. ईस्वी सन् का मौलिक संबंध ईसाई पंथ से नहीं है। यह तो यूरोप के अर्ध सभ्य कबीलों में ईसामसीह के बहुत पहले से ही चल रहा था।

2. इसके एक साल में 10 महीने के 304 दिन होते थे। क्योंकि बर्फीली आंधी और शीत के 60-62 दिन लोग गुफाओं में छिप कर बिताते थे। इन दिनों की साल में कोई गिनती नहीं होती थी।

3. पुरानी रोमन सभ्यता में भी सेनापति जुलियस सीजर के समय तक यही 10 महीने का कैलेंडर चलता रहा। फिर इसमें संशोधन हुआ।

4. जूलयिन सन् ईसा के 45 साल पहले आरंभ हुआ। मिस्र पर जीत के उपलक्ष्य में वहां के नक्षत्र विज्ञानी सोसीजेनेस की सलाह पर यह सन् शुरू हुआ। इसके 364/4 दिन होते थे और चार साल में एक लीप ईयर होता था।

5. ईसा के 530 साल बाद सिथियन बिशप डायोनिसयिस एक्सीजुअर ने खूब हिसाब लगाया और इस जुलियनसन को ईस्वी सन् के रूप में घोषित किया।

6. 25 दिसंबर को ईसा का जन्मदिवस इसलिए घोषित किया गया क्योंकि सदियों से मिस्र, बेबीलोन, ईरान में सूर्य का दिन लोग उत्सव के रूप में मानते आ रहे थे। क्योंकि इसी दिन से दिनमान बढ़ना शुरू होता था, बस सूर्य की जगह ईशु का जन्म उत्सव चल पड़ा।

7. जुलियन साल के गड़बड़ियों को ठीककरने के लिए 1545 मे ट्रेंट नगर में कैलेंडर सुधार कमेटी गठित

विक्रमी सम्वत भारत के इतिहास के सबसे बड़े वीर, प्रतापी, योद्धा, न्यायप्रिय, दानी राजा विक्रमादित्य के नाम पर शुरू किया गया जिनका शासन मध्य ऐशिया (अरब -ईरान) तक फैला हुआ था। इन्होंने अपने काल में पवित्र हिन्दू वैदिक संस्कृति को पूर्ण रूपेण फैलाकर विश्व का कल्याण किया था।

हुई। इस काल तक पोप की सत्ता स्थापित हो चुकी थी। इसलिए कमेटी नेसभी सुधार के अधिकार पोप को दे दिए।

8. 1572 में ग्रेगरी महोदय तेरहवें पोप बने। उन्होंने कैलेंडर के विषय में नेपिल्स के चिकित्सक एलायसियस लिलियस से सलाह की। उसकी सलाह के अनुसार कैलेंडर को 10 दिन आगे बढ़-ाकर 5 अक्तूबर शुक्रवार को 15 अक्तूबर शुक्रवार मान लिया गया तथा आगे से हर चौथे साल को लीप इयर माना गया। यह कैलेंडर अब ग्रेगेरियन कैलेंडर के नाम से प्रसिद्ध हो गया। अब एक नई गड़बड़ी हो गई कि चार सौ साल में जो लीप ईयर सौ होने चाहिए थे। वे 97 ही रह गये।

9. ब्रिटेन ने इस कैलेंडर को सन् 1775 अर्थात् दो सौ साल बाद अपमान जनक। उस समय कैलेंडर में ग्यारह दिन कम करके 23 सितंबर को 14 सितंबर मान लिया।

10. इस कैलेंडर में 28-29, 30 या 31 दिनों के महीने होते थे। यह न तो किसी खगोलीय गणना पर आधारित है और न ही किसी प्राकृतिक चक्र पर।

11. इस प्रकार कैलेंडर रिफार्म कमेटी ने विक्रमी संवत् को राष्ट्रीय संवत रूप में स्वीकार किया।

12. डॉ. साहा ने सृष्टि संवत कलियुग संवत एवं विक्रमी संवत के पक्ष में अनेक वैज्ञानिक प्राकृतिक तथ्यात्मक तर्क भी प्रस्तुत किया, परंतु वे नहींमाने गये। हमें चाहिए कि इस अवैज्ञानिक, तर्कहीन तथ्यों पर आधारित ईस्वी सन् को छोड़कर अपने भारतीय संवत को ही अपनाएं जो वैज्ञानिक और प्राकृतिक तथ्यों पर आधारित है।

देश में हिन्दू के रूप में जीना है तो राजनीति में हिन्दू के रूप में खड़े हों। हिन्दू महासभा के सदस्य बने और बनाएं।

संपादक

Aggarwal Sports
Dealers & Suppliars of sports Goods, Indoor Games, Musical Instruments, Sports Wears & Sports Shocs Specialist in: All kind of Sports Goods
Ph: 22307151, 9811667151

Vinay K. Chadha Ph: 2213534 2283534
New Calcutta Jewellers (Regd.)
Double Storey Showroom
Gold Diamond & Silver Showroom
Shop: Chowk Phullan Wala, Bazar Kalan, Jalandhar

Authorised Sale & Service Dealers:
GENERAL LG HITACHI Panasonic BLUE STAR DAIKIN LUMINOUS EXIDE
Gourav Singhal 22154516 22157597 9810420396
Santosh Enterprises
25/1 SHIVA KHAND OPP VIVEK VIHAR, PHASE-II DESU OFFICE DELHI-95
E-mail santosh1_enterprises@rediffmail.com

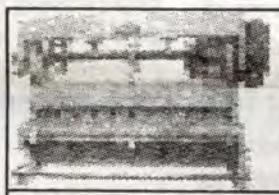
Vishal Goyal 9999359623
Ayush Jain 8800716797
Goyal Sheet Cutter
MS SHEET AVAILABLE
SS Cutting upto 6mm & Lenght 8 ft.
10335, Sadar Thana Road, Motia Khan, New Delhi-110055

KE Ph. : 23412488 23414696
Kurta Emproium
INDIA'S LEADING STORE FOR LUCKNAWI CHICKEN WORK & FANCY KURTA PYJAMA
E-mail: Lucknowsewa@rediffmail.com
12, Shanker Market, Connought Plaee, New Delhi-01

नेत्रदान महादान महाकल्याण
दृष्टि जीवन है
AGIFT ONLYYOUCANGIUE- वह अमूल्य उपहार जो आप ही दे सकते हैं मृत्योपरांत राष्ट्र को नेत्रदान करने का आज ही संकल्प करें। आपका नेत्रदान दो व्यक्तियों को जीवन ज्योति देगा। नेत्रदान संबंधी जानकारी हेतू संपर्क करें:-
रमेश चंद लूथरा-85, जागृति एन्कलेव फेस-III दिल्ली-92
(M) 9873241771 (R) 01122145303
(DIRECTOR/COORDINATOR-EYEDONATION PROJECT)
महावीर इंटरनेशनल (रजि. स्वयं सेवी संस्था), 6550 मेन कुतुब रोड नवी करीम, नई दिल्ली-55, फोन-01123526502, 01123510770

P.K. PAINT & HARDWARE STORE
SHUNTY AHUJA, LOKESH AHUJA
DEALSIN:PAINT, PRIMER OBD & HARDWAREMATERIAL ETC
27/38, JWALA NAGAR, SHAGDARA, DELHI-110032
Ph. 9811470111, 9213731331, 22301603

Raman Kumar Email:rkon62@gmai.com
Lead Advisor RKON
m 09815893411
ISI Marka EXPORT & CONSULTANT
- ISO 9001,ISO 140001, OHSAS, 18001, ISO 22000, HACCP, ISO/TS 16949
- ISO 20000, ISO 27001, ISO 13485, ISO 10002, SA 8000, SRM Certification
- CGMP, HALAL, BRC, Certificate, GAIN Certificate, CE Mark Certificate, NABH, NABL ApprovedTest Report
- Liasoning for ISI Mark Certificate , CPWD, DGS&D ,NSIC, BEE, Star Rating, FPO , MFPO Registration
- IE Code ISBN NO., trademark , Logo, Copy right ,& other Registration

Regd. Off. B-III/772, New grain Market Road, Jalandhar City 144008 (India)

सोना चांदी धाम
Aggarwal
Silver Palace
528, Maharaja Agrasen Marg, Bara Bazar
Opp. Aggarwal; Sports, Shahdra, Delhi-32
9911167151, 22307152

हमारा खाता नं. 62384620050 जंगबहादुर क्षत्रिय, मो. 9599552030 स्टेट बैंक हैदराबाद ब्रांच, ए-22 विवेक विहार दिल्ली-95 पर आर्थिक सहयोग देकर कृतार्थ करें।

संपादक, मुद्रक, प्रकाशक: जंगबहादुर क्षत्रिय, 9599552030, डॉ. संतोष राय प्रबंध संपादक-9999188800, मुरारी लाल लोहरा 9350895166, लखी चंद बंसल, नारायणा, दिल्ली 09810085046, महेंद्र सिंह- 9312295299, दीपक चोपड़ा कार्यध्यक्ष-08459515751,

कार्यालय- 7/377, ज्वाला नगर, शाहदरा, दिल्ली-32, कानूनी सलाहकार: डॉ. वी.पी. शर्मा, अधिवक्ता रामजन्म भूमि। किसी भी लेख से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी वाद-विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली कोर्ट ही होगा। कोर्ट से पहले मुकदमा प्रेस काउंसिल से जीतना होगा। हमारा उद्देश्य धन कमाना बिल्कुल भी नहीं है। केवल और केवल राष्ट्र रक्षा एवं धर्म रक्षा है। प्रकाशित बालाजी आफसेट नवीन शाहदरा, दिल्ली-32।

कुरान व बाइबिल कहते हैं जो मुझे नहीं मानते वे काफिर हैं धर्म तो केवल हिन्दू है मिलाकर देखें

संग्रहकर्ता - सेठ रोशन लाल अग्रवाल

संख्याबल भी एक शक्ति ही है।

(आगे से)

यदि मुहम्मद पैगम्बर संख्यावर्धन की आक्रामक नीति नहीं अपनाता, तो वह मरते दम तक अकेला महम्मद ही रहता। संसार में आज जो बीस करोड़ मुसलमान फैले हुए हैं वे कदाचित ही दिखाई देते। गत महायुद्धा काल में जर्मन लोग क्या सैनिक गुणबल में अन्य विपक्षी राष्ट्रों से कम थे? पर उनके विपक्षियों ने उन पर जो सीनाजोरी की वह मुख्यतः संख्याबल पर ही नहीं की थी क्या? अमरीका के युद्धप्रवेश से संयुक्त राष्ट्र का संख्याबल अकेले जर्मनी के संख्याबल से एकदम बहुत बढ़ गया, यही तो उक्त पराजय का एक प्रमुख कारण है। जब ऐसी स्पष्ट स्थिति दिखाई देती हो और साथ ही विपक्षियों द्वारा संख्याबल वर्धन के यथासंभव पूरे प्रयास हाते हों तब हिन्दू को भर यह कहना कि संख्या में क्या है? लुटने दो? भ्रष्ट होने दो? जो बचेंगे उनकी ही गुणरूपी शक्ति आप बढ़ाते रहो क्योंकि वही पर्याप्त है। क्या यह आत्मवचना की चरम सीमा नहीं है? पालने के निकट खड़ी होकर दादी मां जो कहानी कहती है, उस कहानी का वह प्रचण्ड राक्षस एक-एक मुट्ठी में दस-दस लोगों को पकड़ने वाला! उस राक्षस की बात पर विश्वास रखने वाला अल्हड़ बच्चा भी इतना तो समझता ही है कि उस राक्षस की मुट्ठी में सब कुछ तो नहीं समायेगा, और उसकी खबर लेने के लिये कुछ तो बचेगा ही? पर संख्याबल के महत्व की इतनी साधारण सी बात भी इन प्रतिष्ठित तथा सुज्ञ अल्हड़ों की समझ में नहीं आती यह कितने आश्चर्य की बात है? या आश्चर्य की भी नहीं। तथापि, मुसलमानों को संतुष्ट रखना है, इसलिये शुद्धि के विरुद्ध कुछ तो बोलना ही चाहिये, पर न्यायपूर्ण अधिकार ी दृष्टि से तो अब कुछ बोला ही नहीं जा सकता। इसलिए इस पुष्टिपत वाणी से उसका निषेध करने के प्रयास रूप ऐसे धूर्त विधान किये जाते हैं कि हिन्दुओं, जाने दो उस शुद्धि को! जरा समझो तो, संख्या में क्या धरा है? करोड़ों भ्रष्ट होते हैं तो होने दो, हम जो मुट्ठीभर शेष रहेंगे वे ही गुणरूपी शक्ति से बढ़कर, बढ़कर, बढ़कर जैसे मानो तब एक अन्य जातियां गुणरूपी शक्ति में कम ही होती जाएंगी? वे भी तो गुण रूपी शक्ति को बढ़ाती जाएंगी और फिर गुणों का जोड़ लगने पर अन्ततोगत्वा संख्याबल के प्रश्न पर ही प्रमुख रूप से राष्ट्र के एवं समाज के जीवन मरण का प्रश्न अबलम्बित होगा।

परंतु, यदि कोई ऐसा कहें कि हमें तो केवल संख्याबल ही बढ़ाना है तो उनके लिये एक बार यह उत्तर उचित होता कि, केवल संख्याबल से सर्वत्र हमारा काम हो नहीं सकता, गुणरूपी शक्ति की ओर भी ध्यान देना ही होगा। पर आक्षेपकों से यह किसने कहा कि, शुद्धि आंदोलन या अस्पृश्यतानियारण के तीव्र प्रयास केवल संख्याबल के ही बर्धन हेतु चल रहे हैं?

आपसे यह किसने कहा कि हम केवल संख्याबल ही चाहते हैं और गुणरूपी बल हमें आवश्यकता नहीं है?

गुणरूपी बल बहुत श्रेष्ठ इस प्रकार के एक सौ लोगों की एक टोली हो, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति श्रीकृष्ण के समान चतुर एवं भीम के समान बलवान है। ऐसा भी यदि मान लें, तो भी उन पर उक्त गुणबल में व्यक्तिशः बहुत ही कम होने वाले एक हजार लोगों की टोली यदि टूट पड़े तो वह उनका सफाया किये बिना नहीं रह सकती। जरा-सी टिड्डी, मनुष्य की तुलना में गुणरूपी शक्ति में कितनी कनिष्ठ यःकश्चित् कीड़ा, परंतु जब वैसी, अनाराणान हि वस्तूनां सहति-उन टिड्डियों की अगणित संख्या का संहत धाबा जब मानव पर होता है तब गांव के गांव और प्रदेश के प्रदेश वीरान बना के वह आगे बढ़ता है। छत्रपति शिवाजी, समर्थ गुरु रामदान गुणरूपी शक्ति के दैवी गुणबल के मूर्तिमन्त अवतार थे पर अफजलखान से लेकर औरंगजेब की सेना तक से वे अकेले सामना नहीं कर सके। उपद्रवी विद्रोही सरदारों से लेकर साधारण मनुष्य तक के हजारों लोगों का संख्याबल एकत्रित करके ही उन्हें यह कार्य सम्पादित करना पड़ा। यह स्पष्ट रूप से दिखाई देने वली बात अपनी दृष्टि से ओझल करने की यह एक ही चालाकी, शुद्धिसंगठन के संबंध में बकवास करने वाले ये आक्षेपक करते हैं ऐसी बात नहीं, तो उनके संख्याबल में क्या धरा है, गुणरूपी बल को शक्ति को बढ़ाओ।

(शेष अगले अंक में)

संग्रहकर्ता - प्रो. ए.के. मल्होत्रा

अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

(समीक्षक) भला! इस बात को कोई मानसकता है कि पत्थर से ऊंटनी निकले! वे लोग जङ्गली थे कि जिन्होंने इस बात को मान लिया। और ऊंटनी की निशानी देनी केवल जङ्गली व्यवहार है, ईश्वरकृत नहीं। यदि यह किताब ईश्वरकृत होती तो ऐसी व्यर्थ बातें इसमें न होती।।१२०।।

१२१-ऐ मूसा बात यह है कि निश्चय मैं अल्लाह हूं गालिब।। और डाल दे असा अपना बस जब कि देखा उसको हिलता था मानो कि वह सांप है ऐ मूसा मत डर, निश्चय नहीं डरते समीप मेरे पैगम्बर।। अल्लाह नहीं कोई माबूद परंतु वह मालिक अर्श बड़े का।। यह कि मत सरकशी करो ऊपर मेरे और चले आओ मेरे पास मुसलमान होकर।

-मं.५। सि. १९। सू. २७। आ.९।१०।२६।३१।।

(समीक्षक) और भी देखिये अपने मुख आप अल्लाह बड़ा जबरदस्त बनता है। अपने मुख से अपनी प्रशंसा करना श्रेष्ठ पुरुष का भी काम नहीं, खुदा का क्योंकर हो सकता है? तभी तो इंद्रजाल का लटका दिखला जङ्गली मनुष्यों को वश कर आप जंगलस्थ खुदा बन बैठा। ऐसी बात ईश्वर के पुस्तक में कभी नहीं हो सकती। यदि वह बड़े अर्श अर्थात सातवें आसमान का मालिक है तो वह एकदेशी होने से ईश्वर ही नहीं हो सकता है। यदि सरकशी करना बुरा है तो खुदा और मुहम्मद साहेब ने अपनी स्तुति से पुस्तक क्यों भर दिये? मुहम्मद साहेब ने अनेको को मारे इससे सरकशी हुई वा नहीं? यह कुरान पुनरुक्त औरपूर्वापर विरुद्ध बातों से भरा हुआ है।।१२१।।

१२२-और देखेगा तू महाड़ों को अनुमान करता है तू उनको जमे हुए और वे चले जाते हैं मानिन्द चलने बादलों की कारीगरी अल्लाह की जिसने दृढ़ किया हर वस्तु को, निश्चय वह खबरदार है उस वस्तुत के कि करते हों।।

-मं.५। सि. २०। सू. २७। आ.८७।८८।।

(समीक्षक) बद्दलों के समान पहाड़ का चलना कुरान बनाने वालों के देश में होता होगा, अन्यत्र नहीं। और खुदा की खबरदारी तो शैतान बागी को न पकड़ने और न दण्ड देने से ही विदित होती है कि जिसने एक बागी को भी अब तक न पकड़ पायाः न दण्ड दिया। इस से अधिक असावधानी क्या होगी।।१२२।।

१२३-बस मुष्ट मारा उसको मूसा ने बस पूरी की आयु उसकी।। कहा ऐ रब मेरे निश्चय मैंने अन्याय किया जान अपनी को बस क्षमा कर मुझको बस क्षमा कर दिया उसको, निश्चय वह क्षमा करने वाला दयालु है।। और मालिक तेरा उत्पन्न करता है, जो कुछ चाहता है और पसंद करता है।।

-मं.५। सि. २०। सू. २८। आ.१५।१६।६८।।

(समीक्षक) अब अन्य भी देखिये मुसलमान और ईसाइयों के पैगम्बर और खुदा कि मूसा पैगम्बर मनुष्य की हात्या किया करे और खुदा क्षमा किया करे। ये दोनों अन्यायकारी हैं वा नहीं? क्या अपनी इच्छा ही से जैसा चाहता है वैसी उत्पत्ति करता है? क्या उसने अपनी इच्छज्ञ ही से एक को राजा दूसरे को कङ्गाल और एक को विद्वान दूसरे को मूर्खादि किया है? यदि ऐसा है तो न कुरान सत्य और न अन्यायकारी होने से यह खुदा ही हो सकता है।।१२३।।

१२४-और आज्ञा दी हमने मनुष्य को साथ मां-बाप के भलाई करना और जो झगड़ा करे तुझसे दोनों यह कि शरीक लावे तू साथ मेरे उस वस्तु को कि नहीं वास्ते तेरे साथ उसके ज्ञान, बस मत कहा मान उन दोनों का, बर्फ मेरी है। और अवश्य भेजा हमने नूह को तर्फ कौम उसके कि स रहा बीच उन के हजार वर्ष परंतु पचास वर्ष कम।।

-मं.५। सि. २०। सू. २०। सु. २९। आ. ८। १४।।

(शेष अगले अंक में)

संग्रहकर्ता - टी.डी. चांदना आगरा

अथ त्रयोदशसमुल्लासारम्भः

अथ कृश्चीनमतविषयं व्याख्यास्यामः

मार्क रचित इञ्जील

९२-यह क्या बढ़ई नहीं है। -इं. मार्क प. ६। आ. ३।।

(समीक्षक) असल में यूसफ बढ़ई था, इसलिये ईसा भी बढ़ई था। कितने हीवर्ष तक बढ़ई का काम करता था। पश्चात पैगम्बर बनता-बनता ईश्वर का बेटा ही बन गया और जंगली लोगों ने बना लिया तभी बड़ी कारीगरी चलाई। काट कूट फूट फाट करना उसका काम है।।९२।।

लूका रचित इञ्जील

९३- यीशु ने उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है, कोई उत्तम नहीं है, केवल एक अर्थात ईश्वर।।

इं. लू. प. १८। आ. १९।।

(समीक्षक) जब ईसा ही एक अद्वितीय ईश्वर कहाता है ब्लो ईसाइयों ने पवित्रात्मा पिता और पुत्र तीन कहां से बना लिये?।।९३।।

९४-तब उसे हेरोद के पास भेजा।। हेरोद यीशु को देख के अति आनन्दित हुआ क्योंकि वह उसको बहुत दिनों से देखने चाहता था इसलिये कि उसके विषय में बहुत सी बातें सुनी थीं और उसका कुछ आश्चर्य कर्म्म देखने की उसको आशा हुई।। उसने उससे बहुत बातें पूछीं परंतु उसने उसे कुछ उत्तर न दिया।। -इं. लू. प. २३। आ. ७।८।९।।

(समीक्षक) यह बात मत्तीरचित में नहीं है इसलिए ये साक्षी बिगड़ गये। क्योंकि साक्षी एक से होने चाहिये और जो ईसा चतुर और करामाती होता तो उत्तर देता और करामात भी दिखलाता। इससे विदित होता है कि ईसा में विद्या और करामात कुछ भी न थी।।९४।।

योहन रचित सुसमाचार

९५-आदि में वचन था और वचन ईश्वर के संग था और वचन ईश्वर था। वह आदि में ईश्वर के संग था। सब कुछ उसके द्वारा सृजा गया और जो सृजा गया है कुछ भी उस बिना नही सृजा गया। उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों का उजियाला था। -यो.प. १। २। ३। ४।।

(समीक्षक) आदि में वचन बिना वक्ता के नहीं हो सकता और जो वचन ईश्वर के संग था तो यह कहना व्यर्थ हुआ। और वचन ईश्वर कभी नहीं हो सकता क्योंकि जब वह आदि में ईश्वर के संग था तो पूर्व वचन वा ईश्वर था, यह नहीं घट सकता। वचन के द्वारा सृष्टि कभी नहीं हो सकती जब तक उसका कारण न हो। और वचन के बिना भी चुपचाप रह कर कर्त्ता सृष्टि कर सकता है। जीवन किस में वा क्या था, इस वचन से जीव अनादि मानोगे, जो अनादि है तो आदम के नथुनों में श्वास फूंकना झूठा हुआ और क्या जीवन मनुष्यों ही का उजियाला है, पश्वादि का नहीं?।।९५।।

९६-और बियारी के समय में जब शैतान शिमोन के पुत्र यिहूदा इस्कारियोती के मन में उसे मकड़वाने का मत डाल चुका था। -यो.प. १३। आ. २।।

(समीक्षक) यह बात सच नहीं। क्योंकि जब कोई ईसाइयों से पूछेगा कि शैतान सब को बहकाता है तो शैतान को कौन बहकाता है? जो कहो शैतान आप से आप बहकता है तो मनुष्य भी आप से बहक सकते हैं पुनः शैतान का क्या काम? और यदि शैतान का बनाने और बहकाने वाला परमेश्वर है तो वही शैतान का शैतान ईसाइयों का ईश्वर ठहरा। परमेश्वर ही ने सब को उसके द्वारा बहकाया। भला ऐसे काम ईश्वर के हो सकते हैं? सच तो यही है कि यह पुस्तक ईसाइयों का और ईसा ईश्वर का बेटा जिन्होंने बनाये वे शैतान हों तो हों किंतु न यह ईश्वरकृत पुस्तक न इसमें कहा ईश्वर और न ईसा ईश्वर का बेटा हो सकता है।।९६।।

९७-तुम्हारा मन व्याकुल न होवे। ईश्वर पर विश्वास करो और मुझ पर विश्वास करो।। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं। नही तो मैं तुम से कहता मैं तुम्हारे लिये स्थान तैयार करने जाता हूं।। और जो मैं जाके तुम्हारे लिये स्थान तैयार करूं तो फिर आके तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं तहां तुम भी रहो।।

(शेष अगले अंक में)

हकीकत को प्राणदण्ड देना कुफर है न्याय नहीं

हकीकत मेरी निगाह में निर्दोष है

इसे मृत्यु या मुसलमान बनाने का दंड देना महापाप है : मुस्लिम जज

लेखक चमन लाल क्षत्रिय
(संपादक वीर सावरकर)

(बाकी का शेष पढ़ें)

"सांझे हिन्दू चौधरी की करतूत पर थूका हर एक शिष्ट ने"

जज महोदय की इन बातों का उत्तर हकीकत देने ही लगा था कि हिन्दुओं के साथ आए हुए सांझे चौधरी मनोहर लाल ने हकीकत राय को जज साहब की बात को मान लेने के लिए प्रेरित किया। उसे कहा अल्ला व ईश्वर एक है। ईश्वर की माला न फेरी तो अल्ला की तस्बी ही सही। दोनों सूरतों में माला के मनके ही घुमाने हैं। राम और रहीम के कोई भेद नहीं है। सांझा चौधरी बोले जा रहा था। उपस्थित हिन्दू उसे रोकते ही रहे। उसकी सभी बातों के विषय में हकीकत का मुंह तोड़ उत्तर था-

"सर दे सकता हूं परंतु अपना
हिन्दू धर्म नहीं छोड़ सकता।"

हकीकत बड़ा ही पक्के इरादे का था। उसने कहा-प्रभु ने मुझे हिन्दू के रूप में भेजा है। मैं उसके बनाए हुए हिन्दू ढांचे में हेरा फेरी करना भगवान के काम में हस्तक्षेप करने की गुस्ताखी करना समझाता हूं। मैं भगवन कृष्ण की गीता का पुजारी हूं। सांझे चौधरी पर व्यंग कसते हुए कहा तुम केवल भगवान कृष्ण की बंसी के गायक ही हो। यदि तुम गीता के कृष्ण के पुजारी होते तो नपुंसकता पूर्ण उपदेश देते ही नहीं। कृष्ण भगवान के आदेश हैं।

सर्व धर्मान् परित्यज मामेकं श्रणं व्रज!

सभी मत मतान्तरों को ठोकर मारकर मेरी शरण में आओ यानि हिन्दू धर्म पर डटे रहो।

"सर्व धर्म निधनं श्रेयः पर धर्मो भयावहः।"

अपने धर्म पर अड़े डटे रहना ही श्रेयस्कर है। दूसरे मतों में धक्के खाना अपने मान सम्मान को नष्ट करना है। कृष्ण की बांसुरी से निकली मीठी-मीठी आवाज भी यही प्रेरणा देती है।

अल्ला ईश्वर में अंतर

जज साहब ने हकीकत के दृढ़ संकल्प को तोड़ने हेतु हकीकत को मुसलमान बन जाने की प्रेरणा दी। हकीकत राय ने उत्तर देते हुए कहा- आप बीस वर्ष पूर्व मुसलमान बने थे, इतने वर्षों में भी आपको अल्ला व ईश्वर में अंतर का पता क्यों नही चला?

अल्ला के नाम पर बकरों, भैंसों, मुर्गों, बटेरों पर छुरी फेरी जाती हैं। इस्लाम का बड़े से बड़ा मौलवी भी इसका विरोध नही करता क्योंकि अल्ला का जाब्जा यानि विधान ही यह है कि जो मुसलमान नही वह काफिर है। भले कितना ही वह नेक हो उसके गले पर छुरी चला दो। ईश्वर के नाम पर कोई भी, कभी भी गाय, भैंस, मुर्गा आदि नही काटे जाते। ईश्वर के नाम पर किसी का गला काटना अक्षम्य पाप है। अल्ला सातवें आसमान पर रहता है। हूरें (खूबसूरत औरतें) गुलमा (सुंदर लड़के) और शराब अल्ला के बहिशत में मिलने के अफसानों से आप अवगत है ही पर ईश्वर स्वर्ग उनको देता है जो विषय विकारों में धसा हुआ न हो। इसीलिए हर ईश्वर वादी हिन्दू प्रभु से प्रार्थना हर रोज करता है, विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा। अल्ला ईश्वर एक है, का गाना मुसलमान अपनी मस्जिदों और घरों में न गाते हैं न ही इस पर इन्हें कोई निष्ठा है। अल्ला ईश्वर एक है कि बात सुनना भी मुसलमान कोम कुफर समझती है। क्योंकि मुसलमान अपने अल्ला को काफिरों के भगवान से उच्चतम मानते हैं।

श्रीराम और रहीम में अंतर

श्री रामजी का पद्धति के अनुसार औरत न तो पांव की जूती है न ही वह खुदा की खेती है। श्री राम का पुजारी विवाह में लड़की को दान करता है। रहीम का पुजारी लड़की के लिए हक मेहर उसकी कीमत लिखवाता है। श्रीराम की पद्धति वालों के पति-पत्नी के जोड़ों मे आत्म समर्पण होता है। रहीम के बने जोड़ों में पत्नी को तीन बार तलाक कहने से तलाक हो जाता है। राम के सिद्धांतियों के लिए पत्नी केवल पत्नी ही नहीं धर्मपत्नी व अर्द्धांगिनी का महत्व प्राप्त करती है। तलाक हो जाने पर रहीम सिद्धांतियों के पति-पत्नियों के जोड़े यदि पुनः पति-पत्नी के रूप में आना चाहें तो पत्नी को नया पति करना पड़ता है। उससे फिर तलाक लेना होता है। श्रीराम और रहीम की पद्धति में बड़ा अंतर है। आपने अपनी लड़की से मेरे विवाह की जो बात कही है, उसके लिए मैं तैयार नही हूं, क्योंकि मेरे लिए यह घाटे का सौदा है। मेरे श्रीराम के सिद्धांतानुसार पहली पत्नी के होते हुए दूसरी से विवाह करना पाप है। रहीम पद्धति में 4 बीवीयां या कितनी बीवीयां रखने की बात है, इससे मेरा कोई लेना-देना नही है। मुसलमान बनने पर मेरी मृत्यु नहीं होगी क्या आप गारंटी दे सकते हैं? हिन्दू के रूप में शरीर छोड़ते ही मुझे तुरंत नया शरीर मिलना है, मुसलमान बन जाने पर क्या मुझे क्या मत से पूर्व शरीर मिल जाएगा? बिना अपराध के कयामत तक कब्बर में दबे रहने का दण्ड मैं क्यों भुगतू?

हकीकत अकड़ कर कहे जा रहा है। मैं हिन्दू हूं हिन्दू ही रहूंगा, नवाब साहब तथा लाहौर हाई कोर्ट के जज हकीकत को मुसलमान बन जाने का दबाव दे रहे हैं। और अपनी लड़की की शादी करने का लालच दिया था

जज साहब का घबराना

हकीकत राय के युक्ति संगत प्रश्नों ने जज साहब को सोच में डाल दिया। उनकी आत्मा ने कहा कि हकीकत जो कह रहा है सत्य है। जनता में खड़े एक मुस्लिम चौधरी हाजी साहब ने कहा-जज साहब मुसलमान होकर भी आप हकीकत का इतना पक्ष क्यों ले रहे हो? आपके स्थान पर और कोई मुस्लिम जज होता तो हकीकत को इतनी लम्बी बहस न करने देता। तुरंत उसे मुसलमान बन जाने का आदेश दे देता। जज साहब ने हाजी की बात को अनसुना कर हकीकत की धर्मपत्नी से कहा-हकीकत को समझाओ मुसलमान बन जाए जिद न करे। यदि यह न माना तो इसका सर उड़ा दिया जाएगा। तुम विधवा हो जाओगी। तुम पर घर के खर्चे की समस्या आ जाएगी। तुम्हारे वृद्ध सास-सुर की वृद्धावस्था की संकट युक्त हो जाएगी।

हकीकत की पत्नी का प्रेरक उत्तर

हमारे सारे पुर्खे, सास-सुसर तथा मेरे पतिदेव न मृत्यु से डरने वाले हैं और न ही आने वाले संकटों से घबराने वाले हैं।

वे भी क्या मानव हवा चले तो हिल जाएं
थेड़ी सी झेले धून-झुलस कर रह जाएं

हकीकत राय की पत्नी बड़ी ही दिलेर थी। उसकी आयु उस समय लगभग 13 वर्ष थी। उसका नाम लक्ष्मी था। उसका पियर माईके तथा ससुराल में कट्टर हिन्दू पन का वातावरण था। वह शेरनी सच्चे अर्थों में क्षत्राणि निकली। उसने जज से कहा मैं हिन्दू औरत हूं। मेरे पति देव को जिस बात में आत्मिक आनंद प्राप्त होता हो, उसे कर लेने में रोकना पाप समझती हूं। प्रभू सबको हिन्दू रूप में भेजता है। जो अपना शरीर हिन्दू रूप में दोड़ता है प्रभू उसे तुरंत नया शरीर बिना विलम्ब बड़ी ही प्रसन्नता से प्रदान करता है। किन्तु हिन्दू रूप के शरीर में उत्पन्न होने के उपरांत जो उसका डिजाईन बिगाड़ कर मुसलमान बन जाने का गुनाह करते हैं उन्हें प्रभू हजारों वर्षों पश्चात आने वाली कयामत तक कब्र में ही दबे रहने का दण्ड देता है। मेरा मन इस समय बड़ा ही उल्लासित हो रहा है क्योंकि जीवन के मोह तथा धन व स्त्री की लालसा में यह धर्म नहीं छोड़ रहे हैं। प्राणों से भी अधिक प्यारे हिन्दू धर्म की रक्षार्थ सर देने और सहर्ष मृत्यु खरीदने को तैयार हैं। मेरा चित बलियों उच्छल रहा है। लोग मुझे धर्मवीर की पत्नी कहेंगे। इनकी प्रशंसा में दुनिया कहेगी-इसके पति ने सर दे दिया पर वह न झुका और न बिका। मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि शासकीय तौर पर दिए गए प्रलोभन को ठोकर मारकर इन्होंने अपने पूर्वजों की लाज रखी है, उनका सम्मान बढ़ाया है, आपको विदित होना चाहिए:-

हम है वंशज आर्यों केमुश्किल हमें झुकाना।
हिन्दू रहेंगे जिन्दा, जब तक है दुनिया कायम।

हिन्दू औरतों की विशेषता है कर्त्तव्य निभाना। पति देव के बलिदान के उपरांत जो होना है, उसे कर्त्तव्य भाव से निभा लूंगी। जो प्रभु पत्थर में कीड़े को भी दाना दूनका देता है वह धर्म रक्षक हिन्दूवीर की पत्नी को भूखा नहीं रहने देगा। ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। मेरी हार्दिक चाह है कि यह हिन्दू के रूप में जन्में थे, हिन्दू के रूप में ही जाएजहान से सर ऊंचा किए प्रभू श्री राम के चरणों में।

हिन्दू औरत और शमा

शमा जलती है। परवाना आता है। टूट जाने या बुझ जाने पर यह आता नहीं है। हिन्दू औरत की शादी को भले ही चार दिन ही हुए हो, उसके हाथों की मेहेंदी भले ही अभी सूखी भी न हो। उसकी शमा टूट जाए यानि पति मर जाए वह अन्य मतों वालों की भांति नया खस्म नही करती। आपको ऐसी और सती साध्वी औरतें हर मुहल्ले में नजर आएगी। हिन्दू पति-पत्नी के जोड़ों का संबंध जन्म जन्मांतर का होता है। यह रिश्ता दोनों में आत्म समर्पण का होता है। मेरे पति देव अपने धर्म की आन और शान के लिए सर देकर अपने नाम को सार्थिक कर रहे हैं। यह हकीकत, यथार्थ में धर्म की हकीकत है।

तन से शीश उड़ा देने का जालमाना निर्णय

कोर्ट का कक्ष हिन्दुओं और मुसलमानों से भरा पड़ा था। बड़ी लम्बी बहस के पश्चात् बड़े ही दुखी दिल से जज साहब ने 16 वर्षीय हकीकत राय बालक का सर धड़ से उड़ा देने का निर्णय घोषित कर दिया। हिन्दू जगत् चीख उठा। मुस्लिम समाज ने खुशियां मनाई। हकीकत का सर उड़ा देने के उपरांत उसका शव उसके संबंधियों को सौंप दिया गया। भगवान श्री रामचंद्र जी के बेटे लव द्वारा निर्मित लाहौर के दरिया रावी के तट पर पूर्ण वैदिक रीति से उसके शव का दाह संस्कार किया गया। इस दुर्घटना से हिन्दुओं में इस्लाम के विरुद्ध बहुत क्षोभ जागृत हो जाना असंभव न था। इस जघन्य कृत्य से हर हिन्दू के नेत्रों से अश्रु प्रवाहित हुए व मन सिस्का। लाहौर नगर से तीन चार मील दूर रावी नदी के तट पर कोट खोजे शाह में हकीकत राय की समाधि बनाई गई। बसंत के दिन हकीकत का सर तलवार से उड़ाया गया था। पापिस्तान बनने से पूर्व प्रत्येक वर्ष वहां बड़ा भारी मेला लगता था।

प्रख्यात हिन्दू सभा नेता डॉ. गोकुल चंद्र नारंग जीने निजी खर्चे से हकीकत राय की प्रतिमा नइ दिल्ली बिरला मंदिर के समीप हिन्दू सभा भवन में स्थापित कराई है। यहां हर रोज हजारों की संख्या में यात्री अपने श्रद्धा सुमन वीर हकीकत के चरणों में अर्पित करते हुए कट्टर हिन्दू बनने के संकल्प लेते हैं। हकीकत राय की पत्नी लक्ष्मी की समाधि बटाला में बनाई गई है। बटाला भारत में है। हर वर्ष हिन्दू बहुत संख्या में वहां एकत्रित होते हैं। यहां विशाल आयोजन किए जाते हैं। हिन्दू धर्म की जय हो के निनाद गूंजते हैं। अपनी संतान को हकीकत की भांति वीर और यशस्वी बनाने के संकल्प लिए जाते हैं। शहीदों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाया करता। मर रहे राष्ट्र को वह ऐसा जीवन दे जाता है जो शत्रु के लिए प्रलय बन सकता है। अपने समाज को वह धर्म रक्षार्थ अड़ने और बलिदान हो जाने की अमिट प्रेरण दे जाता है।

हिन्दुओं की शान बढ़ा गया हकीकत अपना सर देकर

लाहौर के नवाब उथमान अली ने लाहौर हाईकोर्ट के जज को अपने यहां बुलवाया। हकीकत राय के बलिदान के विषय में वार्ता करते हुए जज ने कहा हकीकत बड़ा ही सुंदर, स्वस्थ व हिन्दू के यप में अति जागरुक और गठीले शरीर का बच्चा था।

जो कोमें अपने बच्चों को धर्म रक्षा की प्रेरणा देती हैं उन कोमों के बच्चे वीर-धीर नैतिक तथा चमत्कारी वे धर्म रक्षक बना सकते हैं। ऐसे बच्चे अपने माता-पिता के आज्ञाकारी होते हैं और धर्म के लिए सर भी सहर्ष देते हैं। जहां यह अपना नाम चमकाते हैं वह यह अपने बंधुओं की भी इज्जत बढ़ा देते हैं। वह बच्चा बड़ा ही दिलेर और शेर था। मैं उसका सर तलवार से उड़ाए जाने का आदेश न देता। लाखों प्रकार से समझाने और धमकाने पर भी जब वह नहीं माना तो मैंने उसके लिए मृत्यु दण्ड की घोषणा कर दी। इतना कड़ा दण्ड सुनकर भी वह उच्छल पड़ा। हर हर महादेव का उसने गर्जती हुई आवाज में उद्घोष किया। निर्णय सुनने और जानने के लिए जनता वहां खड़ी थी। उसने हकीकत राय के मुख पर शौर्यतापूर्ण आव-भाव देखे। चित्र में देखें- नवाब साहब तथा लाहौर हाई कोर्ट में जज हकीकत को मुसलमान बन जानेका दबाव दे रहे हैं। हकीकत अकड़ कर कहे जा रहे हैं। मैं हिन्दू हूं हिन्दू ही रहूंगा। हकीकत के बलिदान से आम मुसलमान खुश थे। उनका विचार था एक काफिर (हिन्दू) तो कम हुआ। आम हिन्दुओं का इससे साहस टूटेगा। किन्तु हिन्दुओं में हकीकत के बलिदान ने इस्लाम के विरुद्ध एक क्रांति की ज्वाला सी भड़का रखी है। सभी हिन्दू हकीकत को वीर व धर्मवीर के रूप मानते आ रहे हैं। जिधर देखों उधर ही हिन्दू सर ऊंचा किए छाती ताने चलता नजर आता है हकीकत के बलिदान पर। कवियों और शायरों ने वीर हकीकत के बलिदान को हिन्दू शौर्यता का रूप दे दिया है। हकीकत को बच्चा समझकर क्षमा कर दिया जाता तो हिन्दुओं के दिलों में इस्लाम के प्रति आदर व सम्मान जागृत होता। हकीकत के बलिदान से हिन्दुओं में हिन्दू चेतना ने अंगड़ाई ली है। हिन्दू जाग गए हैं। हर हिन्दू हकीकत की भांति कट्टर हिन्दू बनना चाहता है।

धर्मवीर हकीकत राय की शव यात्रा के प्रेरक नजारे

लाहौर के बध स्थल से धर्मवीर हकीकत राय के शव की यात्रा निकली। सहस्त्रों की संख्या में हिन्दू उसमें शोकातुर अवस्था में चले। हर नेत्र में अश्रु तथा हर दिल दुख से भरा हुआ था। समुचे लाहौर की दुकानें बंद थीं। सभी हिन्दू भवनों पर काले ध्वज लगाए गए। शव यात्रा का नेतृत्व स्याल कोर्ट के चौधरी लाला सूरज भानजी तथा लाहौर के रईस लाला मनोहर लालजी कर रहे थे। एक शोकसभा हुई। उसमें बोली गई एक प्रेरक कविता पेश है। लहरें गंगा जमना की हमें प्यारी है, राम कृष्ण हनुमान के पुजारी हैं। सोना और चांदी नही सदाचार ही हमारा धन है। वेद गीता रामायण के हम दिल से पुजारी है।

स्वदेशी आंदोलन के प्रथम प्रेरक

वीर सावरकर जी की 134वीं जयंती पर विशेष

लेखक-डॉ. संतोष राय

दो जन्मों का कारावास

वीर सावरकरको जैक्सन वध षड्यंत्र और ब्रिटिश राज्य का तख्ता पलटने का प्रयास करने के आरोप में 50 वर्ष के काले पानी का दण्ड दिया गया। विश्व का अनुपम अभियुक्त और अनुपम ही थी उनकी सजा, दो जन्मों की कठोर कारावास। विश्व में अपने ढंग का पहला ही दण्ड था यह। एस.एस. महाराजा जलयानसे वीर सावरकर को अण्डमान लाया गया। जहां कारागार में नारियल की जटाएं कूटने, रस्सी बंटने का काम ही उन्हें नहीं दिया गया, अपितु मातृभूमि से सैकड़ों मील दूर इस काल रूप कारागार में एक-दो वर्ष नहीं, निरंतर 13 वर्ष तक वे अवर्णनीय यातनाएं सहते रहे। दोनों में हथकड़ी, पैरों में डण्डा-बेडी डाले प्रतिदिन ही उन्हें कोल्हू में बैलों के समान जुतकर 30 पौण्ड तेल भी प्रतिदिन निकालना पड़ा।

अण्डमान में हिन्दू संगठन यज्ञ

किंतु जीवन के इस काल खण्ड में भी हिन्दुत्व अभिमानी वीर सावरकर की स्वातन्त्र्य साधना और हिन्दू संगठन की अग्नि मंद न हुई। उन्होंने जेल में ही शुद्धि यज्ञका सूत्रपात किया। वहां उन्होंने अनेक धर्मच्युत हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया और राष्ट्रलिपि के रूप में देवनागरी का प्रचार भी वे बड़ी लगन सहित करते रहे।

काव्य – सृजन

इतना ही कारागार की ही काल-कोठरियों में उन्होंने गोमातंक और कमला जैसे महाकाव्य का भी सृजन

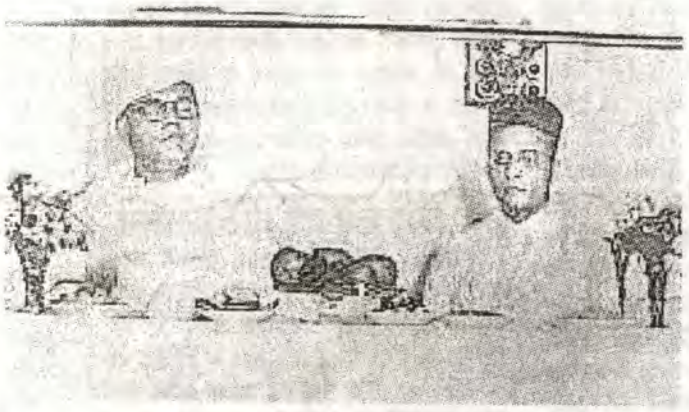

सुभाष चंद्र बोस और सावरकर जी की भेंट।

किया। यही उनके साथ उनके बड़े भाई बाबा गणेश राव सावरकर हिन्दू महासभा के महान नेता देवता स्वरूप भाई परमानंद तथा क्रांतिवीर आशुतोष लाहिड़ी भी स्वातन्त्र्य लक्ष्मी की आराधना हित अवर्णनीय अत्याचार सह रहे थे।

अण्डमान से मुक्ति

13 वर्ष के उपरांत अनेक भारतीय देशभक्तों के प्रयास से वीर सावरकर अण्डमान से भारत लाए गए और वेपहले अलीपुर जेल तथा बाद में रत्नागिरी कारागार में बंदी रहे। रत्नागागिरी में ही उन्होंने अपने महान ग्रंथ "हिन्दुत्व" को भी लिखा। जिसकी प्रशंसा में स्वामी श्रद्धानंद ने लिखा था कि इस ग्रंथ को पढ़कर यह आभास होता है कि वीर सावरकर में वेदों की अभिव्यक्ति करने वाली कोई आदि ऋषि आत्मा अवतरित हुई है।

रत्नागिरी से उन्हें यरवदा जेल में स्थानांतरित कर दिया गया। यही से 6 जनवरी 1924 को वे कारा मुक्त हुए। किंतु साथ ही उनपर रत्नागिरी जिले में ही स्थानबद्ध रहने व राजनीति में भाग न लेने का भी प्रतिबंध लगा दिया गया।

हिन्दू महासभा के मंच पर

रत्नागिरी का उनका यह जीवन भी एक अनुपम गाथा है। यहां ही उन्होंने हिन्दू महासभा को प्राणवान व संगठित बनाने की दिशा में सक्रिय योगदान दिया और रोटी बंदी, बेटी बंदी तथा हिन्दू समाज में व्याप्त छुआछूत के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाया। उन्हीं के प्रयास से रत्नागिरी में पतित पावन मंदिर की स्थापना की गई जिसमें अछूतों को कथाकार बनाया गया तथा देवदर्शन का अधिकार सभी को समान रूप से दिया गया। सहभोग के कार्यक्रम चलाये तो अनेकों अहिन्दुओं को शुद्धिमंत्र भी उन्होंने प्रदान कर विशाल हिन्दू परिवार का अभिन्न अंग बनाया। अंततः बैरिस्टर जमनादास मेहता आदि के प्रयास से उन पर लगे हुए प्रतिबंध समाप्त हुए और 10 मई की ही ऐतिहासिक तिथि को 1937 ई. में वे नजरबंदी से बिना शर्त रिहा कर दिये गये।

सक्रिय राजनीति में

स्थानबद्धता से मुक्त होते ही वीर सावरकर सक्रिय राजनीति में कूद पड़े। उनकी रिहाई पर श्री एम.एन. राय तथा श्री राजगोपालाचार्य आदि ने प्रसन्नता व्यक्त की तो देशगौरव सुभाष चंद्र बोस ने तो उन्हें कांग्रेस में सम्मिलित होने का निमंत्रण भी दिया किंतु मिश्रित राष्ट्रीयता और प्रादेशिक राष्ट्रीयता को हीदेश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण मानने वाले वीर सावरकर ने हिन्दू महासभा के मंच को ही अपनी राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बनाया। कर्णवती से अमृतसर तक सात बार वे हिन्दू महासभा के अधिवेशनों पर अध्यक्ष पद विभूषित करते रहे। उन्होंने घोषणा की कि राजनीति का हिन्दूकरण, हिन्दुओं का सैनिकीकरण और राष्ट्र का औद्योगिकीकरण ही राष्ट्र की मुक्ति का एकमात्र मार्ग है। असम की जामा समस्या के संबंध में 1940 में कश्मीर के भविष्य के संबंध में और भारत के टुकड़े-टुकड़े होने की आशंका को चेतावनी के रूप में उन्ही ने 1942 में व्यक्त किया। उन्होंने शनिवार बाड़ा पूना में 2 अगस्त 1942 को भाषण करते हुए कहा था कि कहीं भारत छोड़ो का नारा ही भारत तोड़ो में न बदल जाए।

सावरकर सुभाष भेंट

22 जून को बम्बई स्थित सावरकर सदन में ही देश गौरव सुभाष और स्वातंत्र्य वीर सावरकर की ऐतिहासिक भेंट भी हुई थी। उन्होंने नेता जी को प्रेरित किया था कि कोलकाता के हालवेल स्मारक को ध्वस्त करने के स्थान पर वे ब्रिटिश की राज्यसत्ता को ध्वस्त करने अपनी शक्ति लगाए वीर सावरकर ने उन्हें परामर्श दिया था। क्रांति की सफलता के लिए सैनिकीकरण का मार्ग अपनाओ। वीर सावरकर जी का परामर्श सुनकर देश गौरव नेता जी सुभाष जी के संबंध में नष्टो मोह स्मृतिर्लब्धः की उक्ति चरितार्थ हो गई और वीरवर सुभाष भी करीष्ये वचनम् तवः कह कर सावरकर सदन से विदा हुए। वीर सावरकर के नेतृत्व में हिन्दू महासभा दिन प्रतिदिन शक्तिशाली होती गई और जब 1942 में क्रिप्स मिशन भारत आया तो उसे भी वीर सावरकर व हिन्दू महासभा को वार्तालाप के लिए आमंत्रित करना पड़ा। मिशन के प्रस्तावों में प्रांतों को भारतीय संघ से पृथक होने के संबंध में दी गई व्यवस्था का वीर सावरकर ने क्रिप्स की उपस्थिति में ही तर्क सम्मत विरोध किया और क्रिप्स को भी निरुत्तर होना पड़ा।

भारतीय स्वातंत्र्य के शुभगमन के लिए वीर सावरकर की नीति की सफलता का एक दृष्टांत आजाद-हिन्द सेना का सफल अभियान भी है। जिसकी अभिव्यक्ति वीर सावरकर की वंदना करते हुए नेताजी सुभाष ने 25 जून 1944 को सिंगापुर नभावाणी से इन शब्दों में की थी। जब भ्रांत राजनीतिक कल्पनाओं और दूरदर्शिता के अभाव में कांग्रेस दल के नेता भारतीय सेना के सभी सैनिकों को भाड़े का टट्टू कह रहे थे, तब मेरे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि वीर सावरकर निर्भयता सहित भारतीय युवकों को सशस्त्र सेनाओं में भर्ती होने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। यही नवयुवक आपको आजाद हिन्द सेना के सैनिकों के रूप में योगदान दे रहे हैं।

अलाउद्दीन की इस हिमाकत का पता लगते ही हिन्दुओं का खून खौल उठा

उसका सर धड़ से उड़ादेने की योजनायें जवानों ने बना ली : पद्मिनी का पति राणा रत्नसिंह

लेखक वीर सावरक संपादक चमन लाल क्षत्रिय

मेवाड़ के राणा नत्नसिंह अत्यन्त ही सज्जन, दयालु, धर्मात्मा तथा विनम्र स्वभाव के वीर योद्धा थे। समूचे राजस्थान में उनके प्रति अपार असीम स्नेह तथा आदर व्याप्त था। मेवाड़ के चित्तौड़ दुर्ग को अजय समझा जाता था। प्रजा रत्नसिंह के लिए हरसमय जी जान से तैयार रहती थी। क्योंकि उसके राज्य में सभी सुखी थे। न्याय भी ठीक होता था। चोरों, लुटेरों, डाकुओं को सर उठाने तक का भी साहस न हो पाता था। जनता पूर्ण निर्भयता से अपने-अपने व्यवसायों में व्यस्त रहती थी। प्रजा को सुखी रखना तथा इसे सशक्त बनाना वह अपना कर्तव्य समझते थे, क्योंकि जानते थे जो राजा विलासता में प्रस्त हो जाता है, उसका गौरव नष्ट हो जाता है। चूंकि वह स्वयं प्रजा केलिए जागरूक होते थे इसी लिए प्रजा भी अपने प्राणों को न्यौछावर करने हेतु हरपल हर घड़ी तैयार रहती थी।

मेवाड़ राजस्थान की वीरता और शौर्यता का प्रतीक रहा है। बापा रावल, राणा हमीर, राणा सांगा, राणा प्रताप जहां विश्व के उज्जवल इतिहास में गौरवशाली स्थान प्राप्तकर पाए हैं वहां की वीरांगनाओं ने भी शौर्यता के इतिहास में खूब में बाड़ का नाम रोशन किया है। महारानी जवाहर बाई, महारानी कर्णवती और महारानी पद्मिनी जैसी वीरांगनाओं ने अपार त्याग से हिन्दुओं और हिन्दुस्थान की शान में वृद्धि हेतु असीम बलिदान किए हैं। यहां की वीरांगनाओं ने हाथोंमें तलवार लेकर राष्ट्र शत्रु का रक्त हिन्दुस्थान की धरती को खूब चटाया है। अपने सम्मान और गौरव को बचाए रखने हेतु जलती चिताओं में सहर्ष शाहदत पाकर अमर हुई है। राजस्थान के इतिहास के प्रख्यात लेखक टाड साहिब का कहनाहै कि विश्व के इतिहास में ऐसे गौरवशाली बिबरण मिलते ही नहीं।

पद्मिनी का स्वप्न : पद्मिनी ने अपने पति राणा रत्नसिंह से कहा-घोर आपत्ती आने वाली हैं। इसका मुकाबला करने की पूरी तैयारी अभी से शुरू कर दी जाए। कल मैंने स्वप्न में देखा कि कोई मुझे आपसे छीन रहा है। यह सुनते ही राणा रत्नसिंह ने कहा- तुम मेवाड़ के राजपूतों की माता के रूप में पूजित हो। वीर योद्धा की पत्नी हो। तुम्हें हमसे छीन लेने का साहस करना प्रलय को निमंत्रण देना है। ऐसे स्वप्नों पर ध्यान देना निरर्थक है। उसके कंधे पर हाथ रखते हुए राणा ने कहा- तुम स्वयं क्षत्राणी हो, अपनी रक्षा और आत्म गौरव बचाने का अपार शौर्य और साहस तुम स्वयं में भी व्याप्त है। आने वाली परीक्षा से जूझने का बल हम में है। हमारी प्रजा भी हमारे लिए तन,मन,धन और जो जान तक न्यौछावर करने वाली है। हमें चिंता नहीं करनीचाहिए। हिन्दू नारी का पतिव्रत धर्म और उसके पति का शौर्य शत्रु को महान विनाश देखने पर बाध्य कर दिया करता है। आपत्ति आ ही जाए तो उससे टकरायेंगे अवश्य। कुत्तों की गुर्राहट का प्रबंध करेंगे जरूर। पद्मिनीको लेकर वह अपने शयन कक्ष में चले गए। रेशमी सेज पर गुलाब के पुष्प बिखरे हुए थे। दोनों मीठे स्वप्नों में खो गए। प्रातः उठे स्नानादि से निवृत होकर मंदिर गए। पद्मिनी के हाथों से काफी सोना दान स्वरूप वितरित कराया। कुल पुरोहित तथा मंदिर के पुजारी जी से आर्शीवाद प्राप्त करके अपनेमहल में प्रधारे।

(शेष अगले अंक में)

(महारानी पदिमनी किताब से है)

पाकिस्तान का निर्माण हिन्दू एवं मुसलमानों के धार्मिक वैमनस्य के आधार पर हुआ था। जब पाकिस्तान के सारे कार्यकलाप भारत एवं हिन्दू विरोधी होते आ रहे हैं

लेखक-विशन चन्द्र सेठ (सांसद हिंदू महासभा)
(अगले अंक का शेष)

यहां पर यह उल्लेख करना समयोचित प्रतीत होता है कि भारत में पूर्व समय में प्रांतों की कल्पना नहीं थी। राजतंत्र अपने-अपने क्षेत्र में शासकीय व्यवस्था हेतु आवश्यक मंडलों की रचना किया करते थे। सर्वप्रथम प्रांतों का गठन अंग्रेजी शासन ने अपनी दृढ़ राजनैतिक एवं सैनिक स्थिति की सुगमता हेतु आरंभ किया था। उदाहरण हेतु प्रारंभ में बंगाल, बिहार, उड़ीसा एवं आसाम को मिलाकर उन्होंने एक प्रांत बनाया था। उसका संचालक कार्यालय कलकत्ता में था बाद में शनैः शनैः वे चार प्रांतो में विभाजित हुए जो आज हमारे समक्ष हैं। उपर्युक्त इतिहास लिखने का मात्र यह प्रयोजन है कि अंग्रेजी शासन ने ही भारत में प्रांतीय व्यवस्था बनायी थी।

आज हमें भारतीय शासन को एक सूत्र में बांधकर संसार का सिरमौर बनाना है। अनुपयुक्त प्रांतीय व्यवस्था का कुफल कश्मीर, पंजाब एवं आसाम हमारे समक्ष हैं। अतः सीमाओं की यथोचित सुरक्षा, शासकीय सुलभ प्रबंध, आर्थिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों को सफलता से लागू करने हेतु दो से तीन करोड़ की जनसंख्या की भौगोलिक स्थिति के आधार पर भारत में अनुमानित नवीन ३२ प्रांतों की रचना हमें करनी होगी और आज जो कई क्षेत्र केंद्र शासित बने हैं उनका इस व्यवस्था में कोई स्थान न होगा।

इस व्यवस्था के उपरांत राजनैतिक संस्थायें छोड़ सामाजिक व्यवसायिक आदि विभिन्न प्रकार के संगठन जो देशव्यापी स्तरपर चल रहे हैं, उन सभी संगठनों के प्रांतीय एवं केंद्रीय मुख्यालयका नवीन गठन किया जायेगा। किन्हीं क्षेत्रों में कुछ विशेष कारणों से जो संगठन कार्यरत हैं यदि उनकी आवश्यकता अनुभव होगी तो उन्हें भी मान्य किया जाये। प्रांतीय संगठन निर्धारित मात्रा में अपने प्रतिनिधि परामर्शदात्री समिति हेतु भेजेंगे, वे प्रांतीय शासन चलाने में राज्यपाल महोदय के सहयोगी माने जायेंगे।

यदि 600 सज्जनों की संख्या से लोकसभा का नव निर्माण हो तो 300 सदस्य राजनैतिक दल पूरे देश से भेजेंगे और 300 सदस्य नीचे अंकित संगठनों द्वारा मनोनीत किये जायेंगे। जिन संगठनों को कितनी मात्रा में लोकसभा में स्थान दिया जाये उसका निर्णय कार्य एवं क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार मनीषी सज्जन भविष्य में करेंगे। इन नवीन संगठनों के गठन हेतु संबंधित सज्जनों को उसका सदस्य 100 वार्षिय धन प्रांतीय मुख्यालय को देने के उपरांत माना जाये। जो सज्जन समय पर स्वतः अपनी सदस्यता का शुल्क जमा न करें तो उनकी सदस्यता समाप्त समझी जाये। साथ ही कोई भी सज्जन केवल एक संगठन के सदस्य बनने के अधिकारी होंगे। ताकि वे उसी क्षेत्र की आवश्यकता पूरी करने में सहायक सिद्ध हो सके।

प्रांतीय संगठन उस धनराशि का 50 प्रतिशत केंद्रीय कार्यालय को भेजें और शेष धन प्रांतीय संचालन हेतु खर्च करें साथ ही माननीय सज्जनों से खर्चे की पूर्ति हेतु विशेष अनुदान केंद्र एवं प्रांतों को प्राप्त करने का अधिकार होगा। ताकि सभी प्रांतीय कार्यालयों में आधुनिक सुविधा यानी फोन, टीवी, टाइप मशीनें, आवश्यक फर्नीचर एवं कुछ कमरे अपने सदस्यों की सुविधा हेतु होने से समाज में संगठनों की गरिमा, प्रभाव एवं सुचारु कार्य चल सकेगा। ठीक यही व्यवस्था हर संगठन हेतु केंद्रीय कार्यालय में भी होना अनिवार्य समझा जायेगा। आज देश में एकत्रएक कार्य क्षेत्र में नगरीय, प्रांतीय एवं केंद्रीय स्तर पर अनेक संगठन कार्यरत है। जैसे-रेलवे, पोस्ट, बिजली, बैंक, शिक्षा, कोयला, चाय बागान आदि जिन्हें विभिन्न सज्जनों ने अपनी नेतागीरी हेतु बर्बस जन्म दिया। नव संगठनों की स्वीकृति के उपरांत देश के सभी संगठन एक सूत्रीय बन जायेंगे। क्षेत्र, नगर, प्रांत एवं केंद्र तक उनका संगठित कार्यक्रम होगा तदुपरांत अन्य किसी भी संगठन को शासन या समाज द्वारा मान्यता न होगी। यदि किसी नवीन संगठन की रचना राष्ट्रीय अथवा प्रांतीय स्तर पर आवश्यक होगी, तो उसे जन्म दिया जायेगा।

नव संगठनों की परिकल्पना

भारतीय समाज की मूलतः जीवन यात्रा, आर्थिक संतुलन, शासन तंत्र का संचालन-व्यय कृषि के विभिन्न क्षेत्रों पर स्पष्ट आश्रत है। अतः इस क्षेत्र के लिये यथोचित संख्या में सांसदों एवं विधायकों का लेना अनिवार्य माना जाये। सभी संगठनों की आवश्यकता के आधार पर गंभीर विचार कर समय पर सज्जन वृन्द उनके प्रतिनिधियों की संख्या निर्धारित करें। ताकि 300 सज्जन राजनैतिक प्रक्रिया से चुने जायें। संत समाज एवं मनीषी सज्जन जो भारत की धार्मिकता, संस्कृति, चरित्र निर्माण के प्रहरी हों वे प्रांतीय और केंद्रीय शासन के सदस्य बन अपने विचारों एवं आवश्यकताओं हेतु शासन को अवगत एवं सहमत करायें। जब भविष्य में देश के सभी कार्यक्षेत्रों द्वारा उनके सांसद एवं विधायक शासन के भागीदार बनेंगे तो विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन करने का सत्यता से कोई आधार शेष नहीं रहेगा। और उस समय हर कार्यक्षेत्र का एक ही केंद्रीय, प्रांतीय नगरीय एवं क्षेत्रीय संगठन शासन और समाज द्वारा सारे देश में मान्य होने से शेष सभी को वर्जित कर दिया जायेगा।

अखिल भारतीय राष्ट्र भाषा एवं प्रांतीय भाषाओं को बलशाली बनाने हेतु शिक्षा क्षेत्र के सभी प्रांतों एवं भाषाओं के सज्जनों का मनीषी संगठन बनाया जाये जो प्रांतों एवं केंद्र को यथोचित शिक्षा हेतु परामर्श देंगे इन संगठनों के माध्यम से राष्ट्रीय, प्रांतीय, क्षेत्रीय एवं जातीय संगठनों को स्वाभाविक बल मिलेगा तथा केवल मात्र यही संगठन शासन एवं समाज द्वारा मान्य होंगे। हमारे देश की सभी भाषाओं हेतु बालकों से लेकर उच्च शिक्षा तक पुस्तकों का चयन शिक्षाक्रम और शिक्षार्थियों की सुविधा एवं छुट्टियां आदि आवश्यक बातों के निर्णय करना इस संगठन का कार्य क्षेत्र होगा तथा उसके प्रतिनिधि शासन को यथोचित परामर्श देकर सहयोग प्राप्त करेंगे। जल, थल, वायु, सेनाओं की यथोचित संख्या एवं नवीनतम शस्त्रों से सुसज्जित करना शासन का प्रमुख कर्तव्य होगा। उसी के साथ हमें अवैतनिक सेना का नवीन गठन करना होगा जिसे भारतीय शोभा सुरक्षा के लिये अनिवार्य माना जावेगा। अवैतनिक जन-सेना एक लाख जनसंख्या में करीब दो सौ स्वस्थ जवानों स्त्री-पुरुषों की बनायी जानी चाहिये। ये सैन्य संगठन आवश्यकता पर विभिन्न सामाजिक कार्यक्षेत्रों में सेना का उत्तरदायित्व ग्रहण करने के साथ राष्ट्रीय आवश्यकता पर देश की रक्षा का भार भी ग्रहण करेगा।

(शेष अगले अंक में)

(भारतीय शासन की विकृतियां और निदान किताब से लिया गया है)

आज स्त्रियों को उनके कर्तव्य से विमुख करके अनेक झंझट में फंसाया जा रहा है

लेखक-के.एल. लूथरा
(अगले अंक का शेष)

देश की समस्याओं के समाधान के लिये परिवार नियोजन कार्यक्रम को अपनाना वास्तव में अपनी पराजय स्वीकार करना है। इससे यह सिद्ध होता है कि मनुष्य इतना आलसीऔर अकर्मण्य हो गया है कि वह अपनी आवश्यकताओं के अनुसार जीवन-निर्वाह के साधनों में वृद्धि न करके खुद को ही समाप्त कर देना ठीक समझता है। जैसे, शरीर परकोई कपड़ा ठीक न आयेतो कपड़े का आकार ठीक करने की अपेक्षा शरीर को ही काटकर छोटा करने का प्रयत्न किया जाये। कपड़ा मनुष्य के लिये है, मनुष्य कपड़े के लिए नहीं। अगर मनुष्य कपड़े के लिये हो जायेगा तो फिर मनुष्य में मनुष्यता रहेगी ही नहीं। कोलिन क्लार्क लिखा है कि आर्थिक सलाहकारों का काम यह बताना है कि अर्थ व्यवस्था को जनसंख्या के अनुसार कैसे ठीक किया जाये, न कि यह बताना कि जनसंख्या को अर्थ व्यवस्था के अनुसार कैसे ठीक किया जाये। किसी भी अर्थशास्त्री को चाहे वह कितना ही बड़ा विद्वान हो और किसी भी सरकार को, चाहे वह कितनी ही शक्तिशाली हो, यह अधिकार नहीं है कि वह मां बाप से संतान कम पैदा करने के लिये अथवा पैदा न करने के लिए कहें। परंतु हर मां बाप को यह अधिकार अवश्य है कि वे अर्थशास्त्रियों से और सरकार से यह मांग करें कि वे अर्थ व्यवस्था को इतना सुदृढ़ बनायें कि उनके परिवार की जीवन निर्वाह संबंधी आवश्यकताएं पूरी हो सकें।

एक आदमी के शरीर से एक बार स्त्री संग के समय जितना वीर्य निकलता है, उससे करोड़ों बच्चे पैदा हो सकते हैं। कारण कि उसमें लगभग पचीस से पचास करोड़ तक शुक्राणु विद्यमान रहते हैं, जिनमें से प्रत्येक शुक्राणु में एक मनुष्य बनने की पूरी क्षमता होती है। परंतु उनमें से कोई एक ही शुक्राणु स्त्री के रज से मिलकर मनुष्य बन पाता है। मनुष्य की इस संतानोत्पादक शक्ति को किसी देश की सरकार ने अथवा खुद मनुष्य ने सीमित नहीं किया है, प्रत्युत उसने सीमित किया है, जो इस सम्पूर्ण संसार का रचयिता, पालनकर्ता और संहारकर्ता है। जनसंख्या के नियोजन का, उसको बढ़ाने-घटाने का कार्य उसके विभाग में है, सरकार के विभाग में नहीं। तात्पर्य है कि सरकार का अधिकार जनसंख्या को सीमित करना नहीं है, पत्युत जितनी जनसख्या है, उसके जीवन-निर्वाहक, उसकी सुरक्षा का भलीभांति प्रबंध करना है। यदि जनसंख्या और जीवन-निर्वाह के साधनों के बीच संतुलन को ठीक रखने का प्रयत्न किया जायेगा तो संतुलन ठीक होने कीअपेक्षा और बिगड़ जायगा। कारण कि जीवन निर्वाह के साधन मनुष्यों के लिये हैं, न कि मनुष्य उनके लिये। मनुष्यों को कम करके अन्न को अधिक पैदा करने की चेष्टा वैसी ही है, जैसी चेष्टा संतान को गर्भ में न आने देकर मां का दूध अधिक प्राप्त करने कीहै। जहां वृक्ष अधिक होते हैं, वहां वर्षा अधिक होतीहै, फिर मनुष्य अधिक होंगे तो क्या अन्न अधिक नहीं होगा? यह प्रत्यक्ष बात है कि जब देश में परिवार नियोजन कार्यक्रम का आरंभ नहीं हुआ था, तब अन्न जितनासस्ता था, उतना आज नहीं है।

अगर सरकार जनसंख्या पर नियंत्रण रखना ही चाहती है तो उसको जन्म पर नियंत्रण रखने के साथ-साथ मृत्यु पर भी नियंत्रण रखना चाहिये। अगर वह वृत्यु पर नियंत्रण नहीं रख सकती तो उसको जन्म पर भी नियंत्रण रखने का अधिकार नहीं है। मनुष्य पैदा होने तो कम हो जाये, पर मृत्यु पहले की तरह अपना काम करती रहे तो क्या परिणाम होगा? युद्ध, अकाल, बाढ़, भूकंप, महामारी आदि कारणों से जितने मनुष्यों की मृत्यु होती है, उसकी कोई सीमा नहींहै। अतः परिवार-नियोजन के द्वारा सरकार जनसंख्या की सीमा निश्चित नहीं करसकती कि अमुक सीमा तक जनसंख्या कम कर दी जाय और फिर उस सीमा से उसको कम न होने दिा जाये, अगर कम हो जाये तो तत्काल उसकी पूर्ति कर दी जाये। तात्पर्य है कि जनसंख्या की व्यवस्था भगवान के हाथ में है। उसकी ओर से अरबों वर्षों से ठीक व्यवस्था चलती आयी है। मनुष्यों को इस विषय में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। इस विषय में हस्तक्षेप करने वाले देश इसका दुष्परिणाम भुगत चुके हैं।

संतति निरोध नास्तिकवाद रूपी विषवृक्ष की उपज है। जो मनुष्य नास्तिक, आलसी-प्रमादी और भोगी हैं, उन लोगों ने ही संतति निरोध कार्यक्रम का आरंभ किया है, वे ही लोग संतति निरोध के समर्थन में दी गयी दलीलों से प्रभावित होते हैं और वे ही लोग इसका दुष्परिणाम भी भोगेंगे।

परिवार-नियोजन कार्यक्रम के दुष्परिणाम

इंग्लैड, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस आदिमें पिछले सौ वर्षों के भीतर जो तीव्र गति से परिवार नियोजन कार्यक्रम अपनाया गया, उसके परिणामों का विश्लेषण करते हुए अमेरिका के जनसंख्या विशेषज्ञ प्रो. वारेन थम्पसन ने लिखा है कि जिस समाज ने संतति निरोध को अपनाया है, उस समाज में शारीरिक योग्यता वाले लोगों की संख्या तो बढ़ रही है, पर बौद्धिक कुशलता वाले विचारशील लोगों की संख्या घट रही है। अन्य विदेशी विद्वान अल्डुस हक्सले बर्ट्रेण्ड रसेल आदि ने भी यही बात कही है कि परिवार नियोजन कार्यक्रम के परिणाम स्वरूप लोगों का स्वास्थ्य और बौद्धिक स्तर गिर रहा है और अल्पबुद्धि वाले एवं अकुशल लोगों की संख्या बढ़ रही है। कारण यह है कि विवाह के बाद आरंभ में स्त्री का पुरुष के प्रति औरपुरुष का स्त्री के पति विशेष आकर्षण रहता है, जिससे उनमें प्रबल भोगेच्छा रहती है। इसलिये आरंभ में जो संतान होती है, वह केवल भोगेच्छा से ही पैदा होती है। भोगेच्छा से पैदा हुई संतान प्रायः अच्छी नहीं होती और बाद में होने वाली संतान की अपेक्षा अल्पबुद्धि वाली, विवेकहीन, भोगी होती है। इसलिये गीता में आया है कि भोगेच्छा रहित योगियों के कुल में ही श्रेष्ठ बुद्धि वाले योगभ्रष्ट साधकों का जन्म होता है।

परिवार नियोजन कार्यक्रम अपनाने से समाज में बच्चों तथा जवानों कीसंख्या कम हो जाती है और बूढ़ों की संख्या अधिक हो जाती है, जिसके कारण देश की आर्थिक उन्नति रुक जाती है और वह विभिन्न दृष्टियों से काफी पिछड़ जाता है। बच्चों और बूढ़ों का अनुपात बिगड़ने से देश की सारी व्यवस्था डांवाडोल हो जाती है। लार्ड कीन्स और प्रो. हेन्सन के मतानुसार जनसंख्या की वृद्धि से आर्थिक तेजी आती है। बेरोजगारी की वृद्धि का कारण जनसंख्या की कमी है। कोलन क्लार्क ने लिखा है कि अगर जनसंख्या में वृद्धि हो और बाजार का आकार बढ़ जाये तो प्रति व्यक्ति उत्पादन बढ़ जायेगा, कम नहीं होगा। अगर अमेरिका और पश्चिमी यूरोप में अधिक जनसंख्यान होती तो कई वर्तमान उद्योग संकट में पड़ जाते और उनका उत्पादन व्यय भी बहुत बढ़ जाता। संतति निरोध के उपायों के व्यापक प्राचार एवं प्रसार से भोगेच्छा बहुत बढ़ जाती है। भोगेच्छा बढ़ने से उनका प्रयोग विवाहित स्त्री-पुरुषों तक ही सीमित नहीं रहता, प्रत्युत अविवाहित लड़के-लड़कियां भी उनका प्रयोग आरंभ कर देते हैं। जिससे समाज में व्यभिचार बढ़ जाता है और समाज की मर्यादा भंग हो जाती है। मर्यादा भंग होने से मनुष्य पशुओं की तरह हो जाता है। फिर कन्याएं भी गर्भवती होने लगती है और विधवाएं भी गर्भवती होने लगती हैं, क्योंकि उनको गर्भ रोकने अथवा गिराने का उपाय मिल जाता है। व्यभिचार बढ़ने से सुजाक, उपदंश, एड्स आदि भयंकर रोगों की भी वृद्धि हो जाती है। लोगों का चरित्र गिरने से देश का घोर नैतिक पतन हो जाता है। परिवार नियोजन कार्यक्रम का यह दुष्परिणाम पश्चिमी देशों में प्रत्यक्ष रूप से देखने में आ रहा है। वहां यौन अपराधों में अत्यधिक वृद्धि हुई है और बीस वर्ष से भी कम उम्र वाले लड़के लड़कियों में सुजाक, उपदंश आदि गुप्त रोग तेजी से फैल रहे हैं।

(शेष अगले अंक में)

(देश की वर्तमान दशा तथा उसका परिणम-किताब से है)

यहां एक कब्र में दफन हैं 9 ब्रिटिश अफसर, ऐसी है 3200 मौतों की ये कहानी

1817 में अंग्रेज–मराठा युद्ध में 3000 मराठा सैनिक हुए थे, 200 वर्ष पूरे होने पर 20 दिसंबर को देंगे श्रद्धांजलि

हरिदास ग्वालियर

इंदौर। 200 साल पहले अंग्रेज–मराठा युद्ध में मारे गए अंग्रेजों की सामूहिक कब्र आज भी उज्जैन जिले में महिदपुर के दुबली गांव में मौजूद है। 1817 के युद्ध में अंग्रेजों की सेना का नेतृत्व करने वाले 9 महत्वपूर्ण अधिकारियों की मौत होल्कर सेना के बहादुर सैनिकों के हाथों हुई थी। इस युद्ध में नौ ब्रिटेश अधिकारी सहित 174 अंग्रेज मारे गए थे। वही तीन हजार मराठा सैनिक भी शहीद हुए थे। दुबली गांव में प्रथम दर्जे के इन अधिकारियों को एक ही स्थान पर एक साथ दफनाया गया था।

पुरातत्वविद व अश्विनी शोध संस्थान के अध्यक्ष डॉ. आरसी ठाकुर ने बताया कि अंग्रेज–मराठा युद्ध में मराठा सेना के करीब 3000 सैनिक मारे गए थे। अंग्रेजों की सेना के 9 ब्रिटिश अधिकारी सहित 174 सैनिकों की मौत और 604 सैनिक गंभीर घायल हो गए थे। उस रात काफी भयानक बारिश होने से कई सैनिकों ने युद्ध स्थल पर ही दम तोड़ दिया था। यही नही युद्ध की शुरुआत के पहले मल्हार राव होल्कर के पास रब जड़ित तलवार थी। अंग्रेजी मेजर हार्स ने राजा से रब जड़ित तलवार छीनकर अंग्रेज सेना के प्रमुख जॉन माल्कम को लाकर दी, जो आज भी यूरोप के ब्रिटिश म्युजियम में संरक्षित है।

ठाकुर के अनुसार अंग्रेजों ने युद्ध में मारे गए हिंदू सैनिकों को जला दिया था, जबकि नौ ब्रिटिश अफसरों को महिदपुर के समीप दुबली गांव में एक साथ एक ही स्थान पर गाड़ दिया था। इनकी कब्र 200 साल बाद भी यहां मौजूद है। इन पर अंग्रेजी में शिलालेख लगे हुए हैं। इनमें अधिकारियों के नाम, पद और उनकी मृत्यु की दिनांक अंकित है। सामान्यतः एक व्यक्ति की एक कब्र का निर्माण होता है, लेकिन युद्ध के कारण अंग्रेज होलकर सैनिको से इतने भयभीत थे कि जल्दबाजी में एक ही स्थान पर नौ अधिकारियों को एक साथ दफना दिया गया। इन नौ कब्रों को बनाने वाले अंग्रेजी अधिकारी आर.गिबिंस थे। इस युद्ध में आर गिबिंस के दो भाइयों की मौत हुई थी।

30 साल की उम्र में ही शहीद हो गई थीं वीरांगना तुलसाबाई

पति के विक्षिप्त होने पर तुलसाबाई ने 10 वर्षों तक होल्करों की सत्ता संभाली और अंग्रेजों से संघर्ष करती रही। अंत में अपने ही लोगो ने विश्वासघात कर 20 दिसंबर सन् 1817 को शिप्रा के तट पर गर्दन काट कर हत्या कर दी गई। हत्यारों को पुरस्कार स्वरूप जावरा की नवाबी मिली। कुशल प्रशासक व महान रानी मात्र 30 वर्ष की उम्र में ही देश के लिए शहीद हो गई।

इन 9 ब्रिटिश अधिकारियों की कब्र

डोनाल्ड मेकालियान सेना प्रमुख, लेफ्टिनेंट चार्ल्स कोलोमन मद्रास यूरोपियन रेजीमेंट्स, लेफ्टिनेंट हेनकोम मद्रास यूरोपियन रेजीमेंट्स, लेफ्टिनेंट ग्लेन थर्ड पी.एल. आई, कैप्टन मार्टन रायफल क्रॉस, लेफ्टिनेंट शहनाहन रायफल क्रॉस, लेफ्टिनेंट कोर्न रायफल क्रॉस, लेफ्टिनेंट गिबिंस सेकंड बटालियन रेजीमेंट्स, लेफ्टिनेंट जॉन गिबिंगस ऑफिसर थर्ड डिविजन।

मुख्यमंत्री चौहान ने की थी शहीद दिवस मनाने की घोषणा

20 दिसंबर को अंग्रेज व मराठाओं के युद्ध को 200 वर्ष पूरे हो रहे है। इसमें शहीद हुए 3000 सैनिकों को श्रद्धांजलि दी जाएगी। सीएम शिवराजसिंह चौहान ने 20 दिसंबर को शहीद दिवस के रूप में मनाने की घोषणा करते हुए राशि भी स्वीकृत की थी। एसडीएम गोमे ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान महान क्रांतिकारी मंगल पांडे के वंशज रघुनाथजी पांडे और महाराणा प्रताप के वंशज विजयसिंह सिसौदिया मराठा सैनिको को श्रद्धांजलि देंगे। वही शहीद वीरांगना तुलसाबाई की समाधि पर भी पुष्पांजलि दी जाएगी।

ग्रामीणों ने कब्र को किया क्षतिग्रस्त

अनदेखी के चलते ग्रामीण इन कब्रों के पास लगे हुए शिलालेख निकालकर ले गए। दूसरी ओर कई लोगों ने सोने और खजाने की खोजबीन करने के चलते इन कब्रों को क्षतिग्रस्त कर दिया है। वर्तमान में कब्रों का संरक्षण होना चाहिए।

शिव के सिर पर क्यों दिखता है चंद्रमा, जानें शिवपुराण में वर्णित कहानी

महंत नारायन पुरी जी महाराज (लुधियाना)

भगवान शिव को शिव शक्ति पुंज के रूप में युगों–युगों से संसार में विद्यमान है. शिव निराकार है. जन्म और मृत्यु के बंधनों से शिव मुक्त हैं लेकिन शिव महापुराण में ऐसी कई कहानियां मिलती हैं, जिनसे पता चलता है कि शिव विनाशक होने के साथ प्राणदायी भी है. ऐसी ही एक कहानी मिलती है शिवपुराण में जब शिव ने चंद्रमा के प्राणों की रक्षा करके उन्हें अपनी जटाओं में विराजित किया था।

इस कारण से चंद्रमा को किया था धारण : शिवपुराण में वर्णित पहली पौराणिक कथा के अनुसार जब समुद्र मंथन किया गया था, तो उसमें से विष निकला था और पूरी सृष्टि की रक्षा के लिए स्वयं भगवान शिव ने समुद्र मंथन से निकले उस विष को ग्रहण किया था। विष पीने के बाद भगवान शिव का शरीर विष के प्रभाव के कारण अत्यधिक गर्म होन लगा। ये देखकर चंद्रमा ने विन्रम स्वर में प्रार्थना की, कि उन्हें माथे पर धारण करके अपने शरीर को शीतलता दें, ताकि विष का प्रभाव कुछ कम हो सके. पहले तो शिव ने चंद्रमा के इस आग्रह को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि चंद्रमा श्वेत और शीतल होने के कारण इस विष की असहनीय तीव्रता को सहन नहीं कर पाते. लेकिन अन्य देवतागणों के निवेदन के बाद शिव ने निवेदन स्वीकार कर लिया। शिव ने चंद्रमा को अपने मस्तक पर धारण कर लिया. बस तभी से चंद्रमा भगवान शिव के मस्तक पर विराजमान होकर पूरी सृष्टि को अपनी शीतलता प्रदान कर रहे हैं. माना जाता है कि विष की तीव्रता के कारण चांद के श्वेत रंग में नीला रंग घुल गया, जिस कारण से पूर्णिमा की रात चांद का रंग थोड़ा–थोड़ा नीला भी प्रतीत होता है।

हाथ–पांव में कीलें ठोकी फिर भी इस शख्स ने नहीं बताया था चंद्रशेखर का पता

सं. सरदार महेंद्र सिंह

झांसी। यूपी के झांसी के सीताराम चंद्रशेखर आजाद के बेहद करीबियों में से थे। देश की आजादी के लिए इन्होंने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया था। लेकिन आजादी के 70 साल बाद भी उनकी फैमिली गुमनामी की जिंदगी जी रही है। हालत ये है कि बहू और 2 पोतियों की मौत पर कफन के लिए भी उधार पैसे मांगने पड़े थे।

कफन खरीदने के लिए जब मांगने पड़े उधार पैसे : आजादी के दीवाने सीताराम आजाद के बेटे राजगुरु परिवार की हालत के बारे में कहते हैं, मेरी पत्नी और 2 जुड़वां बेटियों की एक साथ मौत हुई थी। उस समय मेरे पास कफन के पैसे तक नहीं थे। बड़ी मुश्किल से रिश्तेदारों से उधार पैसे मांगकर कफन खरीदा। किसी के लिए इससे बड़ी विपदा और क्या हो सकती है। जिसने देश की आजादी में अपना घर–बार नहीं देखा, उसके परिवार के पास कफन के पैसे न हो, तो ऐसी आजादी किस काम की। स्वतंत्रता के 70 साल बाद भी एक छत तक नसीब नहीं हुई। इससे अच्छा तो अंग्रेजों की गुलामी ही थी।

70 साल में कई सरकार आईं और चलीं गईं। लेकिन किसी को हमारी याद नहीं आई। बता दें, सीताराम के 3 बेटे और 4 बेटी थीं। सबसे बड़े बेटे लल्लूराम की कर्फ्यू में मौत हो गई थी। छोटा बेटा बाबू नामदेव ग्वालियर में रहता है और सबसे छोटा बेटा राजगुरु झांसी में अपनी बेटी और दामाद के साथ रहता है।

चंद्रशेखर आजाद का पता पूछने के लिए ऐसे टॉर्चर करते थे अंग्रेज : इतिहास के जानकार जानकी शरण वर्मा बताते हैं, ह्यब्जब चंद्रशेखर आजाद झांसी आए तो उनकी मुलाकात सीताराम से हुई। सीताराम उनसे इतने प्रभावित हुए कि अपने नाम के आगे आजाद लिखने लगे और गांधी जी के नमक आंदोलन में खुलकर साथ दिया। चंद्रशेखर आजाद की खोज में अंग्रेज दिन–रात एक कर रहे थे। उस समय सीताराम ने उनकी बहुत मदद की थी। कई फ्रीडम फाइटरों ने आजाद के साथ मिलकर हथियारों की फैक्ट्री लगाई थी। आजाद को कुछ समय के लिए झांसी छोड़ना पड़ा था, लेकिन सीताराम वहीं डटे रहे और अंग्रेजों से लगातार लड़ाई करते रहे।

चंद्रशेखर का पता पूछने के लिए उनके हाथ–पैरों में अंग्रेज कीलें ठोक देते थे, फिर भी सीताराम ने उनका पात नहीं बताया। इस बीच वे 6 बार जेल भी गए। चंद्रशेखर आजाद की खोज में अंग्रेज दिन–रात एक कर रहे थे। उस समय सीताराम ने चंद्रशेखर की बहुत मदद की थी।

पिता ने रोकी वायसराय की ट्रेन– बेटे ने बनाया बम, ऐसी थी इस शख्स की छबी

सं. निरेन्द्र गौतम

झांसी (यूपी)। बुंदेलखंड की गलियों से लेकर देश की संसद तक का सफर तय करने वाले आजादी के प्रखर योद्धा पंडित कृष्ण चंद्र शर्मा संघर्ष के पर्याय थे। आजादी के दिनों में वे पढ़ाई छोड़कर बम बनाते थे। पिता ने वायसराय की ट्रेन रोक कर कहा था– देश को गुलामी पसंद नहीं है।

वायसराय की रोकी थी स्पेशल ट्रेन : वरिष्ठ पत्रकार मोहन नेपाली ने कहा, बुंदेली माटी में 4 अगस्त 1914 को पंडित कृष्ण चंद्र शर्मा जन्में थे। इन्होंने 1948 में देश की संविधान सभा का सदस्य बन कर ना सिर्फ बुंदेलखंड क्षेत्र का मान बढ़ाया बल्कि देश के संविधान निर्माण में उन्होंने अहम योगदान दिया।

देश प्रेम के संस्कार उन्हें बचपन से ही अपने स्टेशन मास्टर पिता लक्ष्मीनारायण से मिले थे। 1924 में झांसी से बल्लभगढ़ के मध्य वायसराय की स्पेशल ट्रेन पहुंची तो स्टेशन मास्टर लक्ष्मी नारायण ने लाल झंडी दिखाकर रोक दी। जब उनसे इस बात का स्पष्टीकरण मांगा गया तो उन्होंने कहा– यदि आप वायसराय हैं तो मैं इस स्टेशन का वासी वायसराय हूं। इस देश को अंग्रेजों की गुलामी मंजूर नहीं है। उनके इस निर्भीक बयान के बाद उन्हें शारीरिक पीड़ा झेलने के साथ अपनी नौकरी से भी हाथ धोना पड़ा। इसके बाद वे बल्लभगढ़ से झांसी आ गए। इस घटना के बाद उनके पूरे परिवार में आजादी का ऐसा जज्बा कायम हुआ कि पूरी फैमिली जेल जाने से भी नहीं कतराई।

पढ़ाई के दौरान बनाते थे बम : उस समय पंडित कृष्ण चंद्र जीआईसी के छात्र थे और झांसी के जार पहाड़ के पीछे क्रांतिकारियों के साथ मिलकर बम बनाते थे। झांसी में ख्याति प्राप्त सेनानी कामरेड रुस्तम लैट्रिन के साथ मिलकर सिग्नल के तार काटना, प्रभात फेरी निकालना, घोड़े पर बैठकर आजादी के लिए प्रचार करना उनके प्रमुख कार्यों में से थे।

1930 में उनकी विचारधारा में परिवर्तन आया और महात्मा गांधी, पंडित नेहरु के विचारों से प्रभावित होकर भी कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बन गए। संघर्ष के दिनों में कई बार उन्हें शारीरिक और आर्थिक दंड के साथ जेल भी जाना पड़ा।1942 में जब देश ह्यकरो या मरोह्ल के नारे पर मचल रहा था और नेताजी सुभाष चंद्र बोस आजादी की हुंकार भर रहे थे, उस समय कृष्णचंद्र झांसी के बाजारों में गरज रहे थे।

ऐसा था उनका पॉलिटिकल करियर : पं. कृष्ण चंद्र के पोते कुशाग्र शर्मा के मुताबिक, दादाजी 1948 में प्रथम स्वतंत्र भारत की संविधान सभा के सदस्य बने। भारत के संविधान पर पंडित कृष्ण चंद्र शर्मा के सिग्नेचर हैं।

सांसद के रूप में पंडित कृष्ण चंद्र ने अपनी अमिट छाप छोड़ी। वह संसद में प्रखर व ओजस्वी वक्ता के रूप में जाने जाते थे। एक बार संसद में उनके भाषण पर पाकिस्तान के दूतावास ने उस समय विरोध प्रकट किया था, जब संसद सत्र चल रहा था। संसद में कीर्तिमान स्थापित करने के बाद उन्हें विधानसभा में भेजा गया। वह 4 बार विधायक रहे विधानसभा में भी उनकी धाक रहती थी। अपनी दलीलों से विरोधियों को परास्त कर देते थे, चाहे टीएन सिंह की सरकार हो या चौधरी चरण सिंह की सरकार हो, उपमंत्री संकेतक के रूप में उन्होंने अपनी दलीलों से विरोधियों के छक्के छुड़ा दिए। कृष्ण चंद शर्मा ललितपुर और महरौनी से लगभग 20 सालों तक विधायक रहे। 2 जुलाई 1993 में उनकी मृत्यु हो गई थी।

द्वारिका से चुरा कर लाई गई थी इस मंदिर की कृष्ण मूर्ति, बेहद रोचक है कहानी

दीपक चोपड़ा पत्रकार

अनोखी है इस मंदिर की कृष्ण मूर्ति, आज भी मौजूद है चोट का निशान : गुजरात राज्य का प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थ डाकोर जी, भारत के प्रसिद्ध तीर्थों में से एक है। यहां पर बना रणछोड़ जी का मंदिर न सिर्फ अपनी शिल्प कला के लिए जाना जाता है, बल्कि भगवान कृष्ण के सुंदर स्वरूप के लिए भी प्रसिद्ध है। इस मंदिर के पीछे एक बहुत ही अनोखी बात जुड़ी हुई है। मान्यताओं के अनुसार, इस मंदिर में स्थित भगवान कृष्ण की मूर्ति को द्वारिका से चुरा कर यहां लाया गया था।

मंदिर से जुड़ी कथा : प्राचीन मान्यताओं के अनुसार, डाकोर जी के मंदिर की मूर्ति द्वारिका से लाई गई थी, जिसके पीछे एक बहुत ही रोचक कथा जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि बाजे सिंह नाम का एक राजपूत डाकोर में रहता था, वह भगवान रणछोड़ का बड़ा भक्त था। वह अपने हाथों पर तुलसी का पैधा उगाया करता था और साल में दो बार द्वारिका जा कर भगवान को तुसली दल अर्पित करता था। कई सालों तक वह ऐसा करता रहा। जब वह बूढ़ा हो गया और चलने फिरने में असमर्थ हो गया, तब एक रात उसके सपने में भगवान ने दर्शन दिए। भगवान ने उससे कहा कि अब द्वारिका आने की कोई जरुरत नहीं है और उसे द्वारिका के मंदिर से भगवान की मूर्ति उठा कर डाकोर जी लाने को कहा। बाजे सिंह ने भगवान के बताए हुए तरीके से आधी रात में द्वारिका के मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करके, भगवान की मूर्ति वहां से चुरा ली और यहां लाकर स्थापित कर दी।

मूर्ति पर आज भी है भाले का निशान : कहा जाता है कि सुबह जब मंदिर के दरवाजे खोले गए तब मंदिर से मूर्ति गायब होने की बात पता चली। यह बात जानने पर मूर्ति को ढूंढना शुरू किया गया। यह बात पता चलने पर बाजे सिंह ने भगवान की मूर्ति यहां एक तालाब में छिपा दी। कहते हैं मूर्ति को ढूंढने के लिए भालों से तालाब में टटोला जाने लगा। जिसके दौरान भाले की नोक मूर्ति में चुभ गई, जिसका निशान आज भी उस मूर्ति पर मौजूद है।

काले पत्थर की बनी है यहां की मूर्ति : रणछोड़ जी की यह मूर्ति द्वारकाधीश की मूर्ति के जैसी ही है। मूर्ति से निचले हाथ में शंख और ऊपर के हाथ में चक्र है। काले पत्थर की यह मूर्ति खड़ी मुद्रा में है, बहुत ही सुंदर और भव्य है।

मंदिर के पास बना है गौमती तालाब : डाकोर जी मंदिर के पास ही गौमती तालाब है, जिसके तट पर डंकनाथ महादेव का मंदिर बना हुआ है। मंदिर के परिसर में ही बाजे सिंह का एक छोटा सा मंदिर भी है। इस मंदिर में प्रभु अपने भक्त से साथ विराजित हैं और यह बात भी इस मंदिर को खास बनाती है।

यहां एक साथ नहीं जा सकते भाई–बहन; रखवाली करता है 180 फीट का सांप

सतीश मदान मुरादाबाद

जालौन। यूपी के जालौन में 210 फीट ऊंची लंका मीनार है। इसके अंदर रावण के पूरे परिवार का चित्रण किया गया है। खास बात ये है कि इस मीनार के ऊपर सगे भाई–बहन एक साथ नहीं जा सकते हैं। आपको इसके पीछे की कहानी बताने जा रहा है। मीनार के निर्माण में लगे थे 20 साल... इतिहास के जानकार हरमोहन पुरवार बताते हैं, इस मीनार का निर्माण कराने वाले मथुरा प्रसाद रामलीला में रावण के किरदार को दशकों तक निभाते रहे। रावण का पात्र उनके मन में इस कदर बस गया कि उन्होंने रावण की याद में लंका का निर्माण करा डाला। 1875 में मथुरा प्रसाद निगम ने रावण की स्मृति में यहां 210 फीट ऊंची मीनार का निर्माण कराया था, जिसे उन्होंने लंका का नाम दिया। सीप, उड़द की दाल, शंख और कौड़ियों से बनी इस मीनार को बनाने में करीब 20 साल लगे। उस वक्त इसकी निर्माण लागत 1 लाख 75 हजार रुपए आंकी गई थी। स्वर्गीय मथुरा प्रसाद न केवल रामलीला का आयोजन कराते थे, बल्कि इसमें रावण का किरदार भी वो स्वंय निभाते थे। मंदोदरी की भूमिका घसीटीबाई नामक एक मुस्लिम महिला निभाती थी। इसमें सौ फीट के कुंभकर्ण और 65 फीट ऊंचे मेघनाथ की प्रतिमाएं लगी हैं। वहीं मीनार के सामने भगवान चित्रगुप्त और भगवान शंकर की मूर्ति है।

कुतुबमीनार के बाद है सबसे ऊंची मीनार, बाहर है 180 फीट का सांप : मंदिर का निर्माण इस तरह कराया गया है कि रावण, अपनी लंका से भगवान शिव के 24 घंटे दर्शन कर सकता है। परिसर में 180 फीट लंबे नाग देवता और 95 फीट लंबी नागिन गेट पर बैठी है। जो कि मीनार की रखवाली करते हैं। नाग पंचमी पर इस कंपाउंड में भव्य मेले का आयोजन किया जाता है और दंगल भी लगता है। कुतुबमीनार के बाद यही मीनार भारत की सबसे ऊंची मीनारों में शामिल है।

भाई–बहन का एक साथ जाना है मना : इस मीनार की एक ऐसी भी परंपरा है जिसके अंतर्गत यहां भाई–बहन एक साथ नहीं जा सकते। इसका कारण ये है कि लंका मीनार की नीचे से ऊपर तक की चढ़ाई में सात परिक्रमाएं करनी होती हैं, जो भाई–बहन नहीं कर सकते। ये फेरे केवल पति–पत्नी द्वारा मान्य माने गए हैं। इसीलिए भाई–बहन का यहां जाना निषेध है।

जलियांवाला बाग नरसंहारः ब्रिटिश सरकार का माफी मांगने से इनकार

श्रेय सिंघानिया लुधियाना

लंदन। ब्रिटेन ने लंदन के मेयर सादिक खानकी उस मांग को खारिज कर दिया है जिसमें उन्होंने कहा था कि जलियांवाला बाग नरसंहार को लेकर ब्रिटिश सरकार को माफी मांगनी चाहिए। विदेश कार्यालय ने माफी मांगने से इनकार करते हुए इसकी जगह चार साल पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री डेविड कैमरन के बयान को दोहराया है जिसमें उन्होंने जलियांवाला बाग कांड की निंदा करते हुए इसे बेहद शर्मनाक कृत्य बताया था।

द इंडिपेंडेंट न्यूज साइट के मुताबिक, विदेश कार्यालय ने कहा, पूर्व प्रधानमंत्री ने 2013 में जलियांवाला बाग के दौरे पर नरसंहार को ब्रिटेन के इतिहास में बेहद शर्मनाक कृत्य करार दिया था और साथ ही ऐसी घटना बताया था जिसे नही भूलना चाहिए। बयान के मुताबिक, यह सही है कि हम मृतकों के प्रति सम्मान रखते हैं और घटना को याद रखते हैं। ब्रिटिश सरकार इस घटना की निंदा करती है। लंदन के मेयर सादिक खान ने अपने अमृतसर दौरे पर बड़ा बयान देते हुए कहा था कि वक्त आ गया है कि ब्रिटिश सरकार जलियांवाला बाग नरसंहार के लिए माफी मांगे। पाकिस्तानी मूल के खान भारत और पाकिस्तान के तीन–तीन शहरों की आधिकारिक यात्रा के तहत अमृतसर दौरे पर आए थे।

उन्होंने जलियांवाला बाग नरसंहार के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की और विजिटर्स बुक में लिखा कि अब वक्त आ गया है कि ब्रिटिश सरकार सन् 1919 में हुए जलियांवाला बाग नरसंहार के लिए माफी मांगे। सादिक खान ने बताया कि उनके लिए जलियांवाला आना एक अद्भुत अनुभव रहा है। उन्होंने लिखा जलियांवाला बाग आने का अनुभव अद्भुत है और यहां जो त्रासदी हुई थी उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

इस तरह हुआ था सूर्य का जन्म और आई पहली किरण धरती पर

ब्रह्म ऋषि डॉ. संतोष राय

मान्यता है कि सूर्य देवता को रोजाना जल चढ़ाने से व्यक्ति को आरोग्य की प्राप्ति होती है और वह दीर्घायु होता है। सारे जगत का निर्माण करने वाले ब्रह्माजी ने ही सूर्य की भी रचना की। सृष्टि के आरंभ में ब्रह्माजी के मुख से ऊं शब्द प्रकट हुआ। तब सूर्य का प्रारंभिक स्वरूप सूक्ष्म था। उसके बाद भू: भुव और स्व शब्द उत्पन्न हुए। ये तीनों पिंड के रूप में ऊं में विलीन हुए तो सूर्य को स्थूल स्वरूप मिला।

इसके पश्चात ब्रह्माजी के चार मुखों से वेदों की उत्पत्ति हुई जो इस तेज रूपी ऊं स्वरूप में जा मिले। फिर वेद स्वरूप यह सूर्य ही जगत की उत्पत्ति, पालन व संहार के कारण बने। मान्यता तो यह भी है कि ब्रह्माजी की प्रार्थना पर ही सूर्यदेव ने अपने महातेज को समेटा व स्वल्प तेज को धारण कर लिया। एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार, सृष्टि के विस्तार के लिए ब्रह्माजी ने दाएं अंगूठे से दक्ष और बाएं अंगूठे से उनकी पत्नी को उत्पन्न किया। दक्ष के 13कन्याएं हुईं। दक्ष की तेरहवीं कन्या का विवाह ब्रह्माजी के पुत्र मारीचि से हुआ। मारीचि से कश्यप उत्पन्न हुए। जो सप्त ऋषियों में से एक हुए।

कश्यप का विवाह अदिति से हुआ। कश्यप और अदिति से उत्पन्न सभी पुत्र देवता कहलाए। कश्यप की दूसरी पत्नी दिति से दानव उत्पन्न हुए। दानव सदैव देवताओं से लड़ते रहते थे।

एक बार दैत्य–दानवों ने देवताओं को भयंकर युद्ध में हरा दिया। देवताओं पर भारी संकट आन पड़ा। देवताओं की हार से देवमाता अदिति बहुत दुखी हुईं। देवताओं के कल्याण के लिए वह सूर्यदेव की उपासना करने लगीं। उनकी तपस्या से सूर्यदेव प्रसन्न हुए और पुत्र रूप में जन्म लेने का वरदान दिया। कुछ समय पश्चात उन्हें गर्भधारण हुआ। गर्भ धारण करने के पश्चात भी अदिति कठोर उपवास रखती जिस कारण उनका स्वास्थ्य काफी दुर्बल रहने लगा।

महर्षि कश्यप इससे बहुत चिंतित हुए और उन्हें समझाने का प्रयास किया कि संतान के लिए उनका ऐसा करना ठीक नहीं है। लेकिन अदिति ने उन्हें समझाया कि हमारी संतान को कुछ नहीं होगा ये स्वयं सूर्य स्वरूप हैं। समय आने पर उनके गर्भ से एक अंड उत्पन्न हुआ जिससे एक तेजस्वी बालक ने जन्म लिया और वह मर्तण्ड कहलाए। मार्तण्ड सूर्य के कई नामों में से एक है। यह देवताओं के नायक बने व असुरों का संहार कर देवताओं की रक्षा की।

अदिति के गर्भ से जन्म लेने के कारण इन्हें आदित्य भी कहा गया है। पुराणों के अनुसार माघ मास की शुक्ल पक्ष कीसप्तमी तिथि को सूर्यदेव की रोशनी पहली बार पृथ्वी पर पड़ी।

फांसी की सजा के बाद पेन की निब क्यों तोड़ दी जाती है?

रमन पाराशर

फिल्मों में अक्सर देखा होगा कि फांसी की सजा सुनाने के बाद जज साहब पेन का निब तोड़ देते हैं। आपको पता है कि ऐसा क्यों किया जाता है। सजा वाले दिन जल्लाद कैदी के कानों में क्या कहता है? जिस फंदे से कैदी को लटकाया जाता है उसे कौन बनाता है। इन सवालों के जवाब शायद ही पता हो। आज फांसी की सजा से जुड़े कुछ फैक्ट्स बताते हैं।

क्यों तोड़ी जाती है पेन की निब : भारतीय कानून में फांसी सबसे बड़ी सजा है। सुनवाई के बाद जब जज फांसी की सजा सुनाता है तो फैसले के बाद पेन की निब तोड़ देता है। ऐसा करने के पीछे संवैधानिक वजह है। एक बार फैसला लिख दिए जाने के बाद खुद जज को भी अधिकार नहीं होता है कि वो फैसले को बदल सके। इसके अलावा एक कारण और भी है। माना जाता है कि पेन से किसी की जिंदगी खत्म हुई है इसलिए उसका दोबारा प्रयोग न हो। फांसी देते वक्त जेल अधीक्षक, एग्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट, डॉक्टर और जल्लाद का होना जरूरी है।

रेयरेस्ट ऑफ रेयर मामलों में होती है फांसी : सुप्रीम कोर्ट ने 1983 में कहा था कि रेयरेस्ट ऑफ रेयर मामलों में ही फांसी की सजा दी जा सकती है। निचली अदालतों में फांसी की सजा मिलने के बाद सुप्रीम कोर्ट में अपील की जा सकती है। सुप्रीम कोर्ट भी फांसी की सजा पर मुहर लगा दे तो फिर राष्ट्रपति से दया की अपील की जा सकती है। अगर राष्ट्रपति भी अपील को खारिज कर दे तो फांसी दे दी जाती है।

जल्लाद कैदी के कान में क्या कहता है : फांसी देते वक्त जल्लाद कैदी के कान में कहता है कि ह्यमुझे माफ कर दो। मैं हुक्म का गुलाम हूं। मेरा बस चलता तो आपको जीवन देकर सत्य मार्ग पर चलने की कामना करता।

सुबह होने से पहले क्यों देते हैं फांसी : ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि फांसी की वजह से दूसरे कैदी और काम प्रभावित न हो। सुप्रीम कोर्ट के दिशा निर्देश के मुताबिक जिस कैदी को फांसी दी जाती है उसके घरवालों को फांसी की तारीख से 15 दिन पहले खबर देना जरूरी है।

कैदी को जिस फंदे पर लटकाया जाता है वो सिर्फ बिहार के बक्सर जेल में कुछ कैदियों द्वारा तैयार किया जाता है।अंग्रेजों के जमाने से ही ऐसी व्यवस्था चली आ रही है।

मनीला रस्सी से फांसी का फंदा बनता है। दरअसल बक्सर जेल में एक मशीन है जिसकी मदद से फांसी का फंदा बनाया जाता है।

आखिरी इच्छा पूछे बगैर किसी कैदी को फांसी नहीं दी जा सकती है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के मुताबिक, साल 2004 से 2013 के बीच भारत में 1,303 लोगों को फांसी की सजा सुनाई गई।

सावरकर टाइम्स द्वारा रिश्ते ही रिश्ते
कार्यालय :- गुलाबदेवी रोड गंदा नाला लोहे का रेलवे पुल, 33 श्याम नगर, जालंधर शहर
संचालक श्रीमति मधु मल्होत्रा
मो. 7837460375

वैकल्पिक ऊर्जा मंत्रालय द्वारा प्रमाणित व Govt सब्सिडी के साथ
सोलर कुकर खरीदें
(रु. 3800 - 900 = रु. 2900 केवल)
कुल कीमत सब्सिडी देय कीमत (टैक्स सहित)
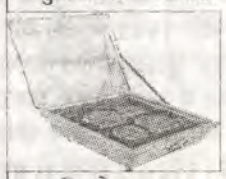
• बिना ईंधन (रोटी छोड़कर) सब कुछ बनायें • स्वादिष्ट भोजन (धीमी गति व सम्पूर्ण विटामिन युक्त) • समय बचायें प्रकृति के साथ • प्रदूषण रहित • भोजन गर्म रहता है व जलता नहीं • सुरक्षित, आग का डर नहीं • 2 वर्ष की गारंटी।
आर्ष इलैक्ट्रोनिक्स (प्रा. लि.) दिल्ली
सम्पर्क सूत्र : 09313478317, 09313478324